राजद समाचार

समानता, भाईचारा और आजादी

अंक-10 मासिक मई, 2022 सहयोग राशि - 20 रुपये

इस बार

देश-विदेश 04

विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष 06

श्रद्धांजलि : नंद किशोर राम 13

चन्द्रशेखर की आत्मकथा 14

मौत की जाति : प्रमोद रंजन 23

मधु लिमये पर श्याम रजक 24

विरासत में जयपाल सिंह मुंडा 25

कवि का पन्ना : अरविंद पासवान : 27

पार्टी गतिविधियां : 28

ई-मेल : raajadsamachar@gmail.com

उपचुनाव से निकले राजनीतिक संकेत

पिछले दिनों देशभर में हुए कुछ उपचुनावों के नतीजे आए और सब में भाजपा-एनडीए की हार हुई। इन उपचुनावों में एक आसनसोल सीट (पश्चिम बंगाल) लोकसभा का था और शेष चार प्रांतीय विधानसभाओं के चुनाव थे, जिसमें बिहार का बोचहा, छत्तीसगढ़ का खैरागढ़, महाराष्ट्र का उत्तरी कोल्हापुर और पश्चिम बंगाल का बालीगंज क्षेत्र था। छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में कांग्रेस की जीत हुई जबकि पश्चिम बंगाल के बालीगंज और आसनसोल दोनों में तृणमूल कांग्रेस ने परचम लहराया है।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत बोचहा सीट पर कांटे की लड़ाई थी, जिसमें भाजपा के साथ राष्ट्रीय जनता दल की सीधी टक्कर थी। यह सीट एनडीए विधायक की असामयिक मौत से रिक्त हुई थी। कई कारणों से यह सीट राजनीतिक चर्चा का केंद्र बना हुआ था। यह इलाका समाजवादियों का पुराना गढ़ रहा है। ठीक बोचहा इलाके के मुसहरी में ही कैंप करके 1970 में समाजवादी-सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण ने अपनी राजनीति की दूसरी पारी का आरम्भ किया था। तब यह इलाका नक्सलवादी आंदोलन का केंद्र बन गया था। पुराने ज़माने में विश्व विश्रुत वैशाली गणराज्य का यह हिस्सा हुआ करता था, जहाँ गणतंत्र ने पहली दफा सगुण रूप लिया था। लिच्छवियों का गणतंत्र बुद्ध के ज़माने में वैशाली में था, जिसे वह बहुत पसंद करते थे।

पिछले अनेक वर्षों से उत्तरी बिहार में भगवाकरण का सिलसिला आरम्भ हुआ और पिछले विधानसभा चुनाव में उत्तर बिहार में राष्ट्रीय जनता दल को अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी। इसे लेकर विचार-मंथन जारी था। जब यह उपचुनाव हुआ तो राष्ट्रीय जनता दल ने इसे एक प्रयोग के तौर पर लिया। 1990 के दशक में जो सामाजिक-राजनीतिक माहौल था, उसमें अनेक कारणों से बदलाव परिलक्षित हुए हैं। राष्ट्रीय जनता दल की जड़ें गांव, गरीबों और सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से अभिवंचित सामाजिक समूहों के बीच हैं, क्योंकि इस पार्टी ने उनके सामाजिक-आर्थिक हितों की लड़ाई लड़ी है और लड़ रही है। जब बाद में समाजवादियों के बीच ही किन्ही कारणों से राजनीतिक बिखराव की स्थिति आई, तब भाजपा को यहाँ जड़ ज़माने का अवसर मिला। 2015 के विधानसभा चुनाव में जब दोनों जनता दल एकबार फिर इकट्ठे हुए तब भाजपा अत्यंत कमजोर स्थिति में आ गई। लेकिन कुछ ही महीने बाद नीतीश कुमार किसी तरह एकबार फिर भाजपा के जाल-फांस में आ गए और भाजपा को बिहार में फिर अवसर मिल गया। 2020 के विधानसभा चुनाव में बिहार की जनता का मूड भाजपा के खिलाफ था। पूरे बिहार के कुल प्राप्त वोटों में केवल बारह हजार मतों के अंतर पर बिहार की भाजपा केंद्रित एनडीए सरकार अस्तित्व में आई। हालांकि सबसे बड़ी पार्टी के रूप में राष्ट्रीय जनता दल ही आया।

तब से अब तक की परिस्थितियां काफी बदली हैं। जनता की तकलीफें एनडीए राज में गहराती जा रही हैं। बिहार के सामाजिक जीवन में आज चौतरफा हताशा की स्थिति है। भाजपा ने अनेक अवसरों पर नीतीश कुमार और उनके दल की सार्वजनिक तौर पर अवमानना की है। चाहे वह कश्मीर फाइल्स फिल्म को करमुक्त करने का मामला हो या रामनवमी पर सामाजिक तनाव विकसित करने का। नीतीश कुमार की अवहेलना कर भाजपा की पूरी कोशिश हुई कि रामनवमी को बिहार में दंगा-फसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाए। यह पूरी राजनीतिक स्थिति

एनडीए में भाजपा के निरंतर वर्चस्वशील होने और उसके अनुसंगी दूसरे दलों के हाशिए पर चले जाने के परिचायक हैं। एक घटक विकासशील इंसान पार्टी के पूरे विधायक दल को भाजपा लील चुकी है। जीतनराम मांझी और नीतीश कुमार की पार्टी को लीलने की कोशिश हो रही है। एनडीए का अंतर्कलह चरम पर है। पिछले विधानसभा सत्र में मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष के बीच हुई सार्वजनिक तीखे नोंकझोंक को पूरे देश ने देखा है।

राष्ट्रीय जनता दल अपनी वैचारिकता और राजनीतिक एजेंडे पर अडिग है। समाजवादी आदर्शों के साथ सामयिक समस्याओं को जोड़कर पार्टी ने अपने कार्यक्रम और रणनीति विकसित की है। तेजस्वी यादव के नेतृत्व में सामाजिक एकता को विकसित करने और फासीवादी-पूंजीवादी भाजपा के खिलाफ लड़ाई गोलबंद करने के उद्देश्य से सभी वाम-प्रगतिशील दलों का मोर्चा विकसित करने में इसकी दिलचस्पी रही है। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और किसान-मजदूरों के सवाल पर राजद ने लगातार संघर्ष किया है। इन सबका नतीजा है कि आज बिहार की जनता ने इस पर विश्वास किया है। विरोधियों द्वारा लगातार यही दुष्प्रचार किया जाता रहा है कि राजद कुछ खास तबकों की पार्टी है। लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में जब तेजस्वी यादव ने दस लाख रोजगार देने के वायदे को अपनी चुनावी घोषणा में सबसे ऊपर किया तब बिहार की राजनीति जातपात से खिसक कर आर्थिक आधार पर केन्द्रित हो गई। इस बीच पार्टी ने बिहार की राजनीति को पूरी तरह जमीन पर ला दिया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और महंगाई के सवाल को भगवाकरण के इस दौर में इसी पार्टी ने राजनीतिक एजेंडे में रेखांकित किया है। इसी का नतीजा है कि छात्र, नौजवान, किसान-मजदूर और सभी तबकों के सभ्य नागरिकों ने अपनी आस्था इस दल के साथ व्यक्त की है। बदलाव के ये लक्षण स्थानीय निकाय के चुनावों में भी दिखे और बोचहा के उपचुनाव में भी।

समाचार पत्रों ने बोचहा उपचुनाव के नतीजे का जो विश्लेषण किया है वह सही नहीं है। वहाँ कोई त्रिकोणीय चुनाव नहीं था। भाजपा और राजद के बीच सीधी टक्कर थी। वीआईपी उम्मीदवार को प्राप्त वोट भी भाजपा विरोधी वोट ही है। दरअसल वहाँ कुल प्राप्त वोटों में से भाजपा को 45909 वोट ही मिल सके, जो कुल वोटों का लगभग एक तिहाई है। राजद को 82562 और वीआईपी को 29279 वोट मिले हैं। राजद जरूर 36653 वोटों से जीता है, लेकिन भाजपा की हार लगभग 66000 वोटों से हुई है। इसलिए बोचहा उपचुनाव ने स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा अपने वास्तविक रूप में क्या है। यदि नीतीश कुमार की पार्टी और जीतनराम मांझी की पार्टी भाजपा का साथ छोड़ते हैं तो कोई भी समझ सकता है बिहार में भाजपा दो दर्जन सीटें भी नहीं निकाल सकती। सामंतवादी मनोवृत्ति के कुछ लोग, जो वास्तविक रूप से भाजपा के राजनीतिक दलाल हैं, जदयू और हम नेताओं को अपनी गिरफ्त में ले चुके हैं। लेकिन जनता समझ चुकी है कि बिहार की राजनीति का ध्रुवीकरण हो चुका है। एक पक्ष जनता के हितों के वास्तविक पक्षधरों का है, और दूसरा पक्ष जातपात और संप्रदाय के नाम पर राजनीति का ध्रुवीकरण करने वाले पूंजीवादी-सामंतवादी सोच के लोगों का, जो समाज में नफरत और तनाव का वातावरण बनाते रहते हैं।

बोचहा का राजनीतिक संकेत यही कि बिहार की जनता ने राष्ट्रीय जनता दल को विकल्प के रूप में चुन लिया है। इसका संकेत यह भी है कि नीतीश कुमार, जीतनराम मांझी और सभी दूसरे दल जो भाजपा के जाल-फांस में हैं या होना चाहते हैं, समय रहते सावधान हो जाएं। जनता ने भाजपा की औकात बता दी है। उसके तमाम मंत्री-विधायक और नेता बोचहा में दिनरात दौड़ लगा रहे थे। बेहिसाब रुपए खर्च किए गए। रामनवमी के रोज मस्जिद पर भगवा ध्वज फहरा कर सांप्रदायिक तनाव पैदा किया गया। लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। बोचहा की जनता ने बिहार की राजनीति को चुपचाप एक दिशा-संकेत दे दिया है।

साइंटिफिक टेम्पर बनाम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

खबर है कि दिल्ली स्थित तीनमूर्ति भवन के नेहरू मेमोरियल को बाबासाहब के जन्मदिन के रोज हमारे प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री मेमोरियल में बदल डाला और अगले रोज गुजरात के किसी कोने में उनके कर कमलों द्वारा हनुमान की 108 फुट ऊँची मूर्ति का अनावरण किया गया। यह सब कुछ प्रधानमंत्री और उनके दल के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का तय एजेंडा है।

तीनमूर्ति स्थित नेहरू मेमोरियल मेरे प्रिय स्थलों में से एक रहा है। जब कभी दिल्ली में होता था और किसी दोस्त से मिलना हुआ तब उसे मैं प्रायः यहीं पर आमंत्रित करता था। उसके कैफेटेरिया में चाय-कॉफी की चुस्कियां लेना मुझे पसंद था। इस बात को छुपाना मैं अपराध समझता हूँ कि जवाहरलाल अनेक कारणों से मुझे प्रिय रहे हैं। हालांकि अनेक बातों को लेकर उनकी आलोचना भी करता रहा हूँ। जैसे कि 1939-40 में सुभाषचंद्र बोस के लेफ्ट कंसोलिडेशन की राजनीति में उनका धोखा देना या फिर प्रधानमंत्री बने रहने के लिए कांग्रेस के समाजवादियों से अलग-थलग हो जाना। लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने एक एकांकी नाटक 'उत्तर नेहरू चरितं' में भूल नहीं रहा हूँ तो नेहरू के छह रूप रखे हैं। वह एकांकी नेहरू के चरित्र को बहुत अच्छी तरह परिभाषित करता है। रेणु समाजवादी राजनीति से जुड़े थे, लेकिन उनका नेहरू प्रेम जगजाहिर था। उनके पटना स्थित आवास के बैठके में केवल दो लोगों के फोटो लगे थे - एक नेहरू और दूसरे विधानचंद्र राय थे।

अनेक लोगों से नेहरू के कुछ मतभेद थे, लेकिन नेहरू का महत्व अपने समय की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में कुछ वैसा ही था, जैसे कभी लेनिन का था। जैसे लेनिन की तुलना स्टालिन, ख्रुश्चेव या ब्रेझनेव-गोर्बाचेव से नहीं की जा सकती, वैसे ही जवाहरलाल की तुलना किसी दूसरे प्रधानमंत्री से नहीं की जा सकती। इसलिए कि वह केवल प्रधानमंत्री नहीं थे, बल्कि प्रधानमंत्री होना उनके व्यक्तित्व का सबसे छोटा पहलू था। जबतक वह प्रधानमंत्री नहीं थे, तबतक उनके व्यक्तित्व का आकर्षण अधिक था। यह अलग बात है कि प्रधानमंत्री के रूप में उनकी जो चुनौतियाँ थीं, उसका भी उन्होंने कुशलतापूर्वक संपादन किया। लेकिन एक लेखक,

चिंतक, राष्ट्रीय आंदोलन के प्रतिनिधि सेनानी और राष्ट्रनिर्माता इत्यादि के रूप में उनका जो व्यक्तित्व उभरता है वह अप्रतिम है। सभी महान लोगों में अंतर्विरोध के तत्व होते हैं। नेहरू में भी थे। लेकिन उससे नेहरू का व्यक्तित्व उपेक्षणीय नहीं हो जाता।

नरेंद्र मोदी ने नेहरू मेमोरियल को जिस तरह से विनष्ट किया उसके लिए आलोचना नहीं, निंदा के शब्द मेरे मन में उभरते हैं। कुछ लोग नया बना कर नहीं, बने हुए को बिगाड़ कर महान बनना चाहते हैं। गजनी के महमूद ने कुछ नया बनाया नहीं, बने हुए भव्य सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त कर दिया। उसे भी तो याद किया ही जाता है। नरेंद्र मोदी ने नेहरू को एक प्रधानमंत्री भर समझा और शायद यह भी कि मैं भी उनकी औकात का हो गया हूँ। किसी भी समाज में मूर्खों की भीड़ होती है और यह भी सही है कि मोदी आज उस भीड़ के चहेते हैं। लेकिन यह कौन-सी भीड़ है? यही भीड़ है जो मेलों-तमाशों में और गंगा-स्नान में जुटती है। वह केवल संख्या होती है। इसी भीड़ को कुचलते हुए कभी गजनी का महमूद और मुहम्मद गोरी ने भारत की अस्मिता कुचल दी थी। इसी भीड़ को निर्विरोध भेदते हुए बाबर ने एक छोर से दूसरे छोर तक भारत को अपने कब्जे में कर लिया था। अंग्रेजों ने इसी भीड़ को बड़े आराम से गुलाम बनाया था।

नेहरू ने अपनी किताब 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' में इस भारत को देखा-समझा। उन्हें एक ऐसा भारत बनाने की जिद थी जो चेतनशील हो। वह भारत जिसमें बुद्ध हों, पाणिनि हों, कालिदास हों, आर्यभटट और वराहमिहिर हों, कबीर हों, तानसेन हों, गांधी-रवीन्द्र हों। इस भारत को कोई महमूद, कोई गोरी, कोई क्लाइब कुचल नहीं सकता। यही कारण था कि उन्होंने साइंटिफिक टेम्पर यानी वैज्ञानिक चेतना पर जोर दिया। इसी के बूते इस जम्बूद्वीप को भारत बनाया जा सकता था। ऐसा भारत जिसकी सीमाओं पर सिकंदर की सेना ठहर-सहम जाय और जिसके बुद्ध-कबीर की वाणी दुनियाभर में मानवता का परचम फहरा सके। इस भारत को तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला से मंडित करना था। उनकी देखरेख में बने भारतीय संविधान ने वर्णाश्रम आधारित सामाजिक व्यवस्था से चुपचाप इंकार कर दिया और एक लोकतान्त्रिक-धर्मनिरपेक्ष समाज की प्रस्तावना की। प्राथमिक शिक्षा को निचले स्तर से सुदृढ़ किया, तकनीकी शिक्षा पर जोर देने के लिए अनेक आईआईटी संस्थान स्थापित करवाए। स्कूल-कॉलेज-यूनिवर्सिटियां बनवाईं। उन्हें एक राष्ट्र बनाना था। वह अडानी और अम्बानी के साथ नहीं, आइंस्टीन और भाभा के साथ बैठते थे। उनका राष्ट्र वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, लेखकों, कवियों और हुनरमंद लोगों के बूते गढ़ा जाना था। बुद्ध और गांधी, मार्क्स और लेनिन से वह सीखते थे। वह बहुरूपिए-विदूषक नहीं, वास्तविक नायक थे। उन्हें भी गंगा से प्यार था, लेकिन वह उनकी मैय्या नहीं, एक खूबसूरत-सांस्कृतिक नदी थी जिसने इतिहास के बदलते जमानों को देखा था, और सचमुच में राष्ट्र की प्रतीक थी, जैसे नील और व्हांगहो अपने-अपने मुल्कों में है।

भारत की जहालत को बदलने के लिए, उसे ज्ञान-केन्द्रित राष्ट्र बनाने के लिए उन्होंने बहुत कुछ किया। उनके समाजवादी साथियों को लगता था कि उन्हें और अधिक करना चाहिए। उनकी आलोचना का आधार यही था। नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण और लोहिया का जोर क्रान्तिकारी बदलाव पर था। यह सही है कि उन्होंने उतना कुछ नहीं किया। लेकिन उन्हें यह भी लगता था कि वह स्टालिन और माओ नहीं, नेहरू हैं। उन्हें लोकतंत्र को साथ लेकर चलना था। इसलिए प्रतिपक्ष को भी उन्होंने पाला पोसा। सावरकर को वह सजा नहीं दिला सके, जो मिलनी चाहिए थी। लोकतंत्र में उन्हें कुछ ज्यादा ही यकीन था। इसी के बूते वह विश्व राजनीति भी करना चाहते थे। लड़ाई और हिंसा पर टिकी राजनीति उन्हें नापसंद थी। इसे वह पुरानी दुनिया की चीज मानते थे। पुराने ज़माने में अशोक ने हिंसा और युद्ध से क्षुब्ध होकर एक नई राजनीति अपनायी थी। उसे वह आधुनिक सन्दर्भों के साथ आत्मसात करना चाहते थे। उनके पंचशील की अंतर्राष्ट्रीय नीति के साथ कम्युनिस्ट चीन ने विश्वासघात किया। भारत की प्रतिक्रियावादी ताकतों के लिए एक मौका मिल गया। गांधी के हत्यारे और बुद्ध के विरोधी एकसाथ हुए और नेहरू पर हमले बढ़ गए। इसी बीच 1964 में नेहरू दिवंगत हो गए।

उन्ही नेहरू की स्मृति में वह तीनमूर्ति स्मारक था। दुनिया भर के लोग आते थे और देखते थे कि नेहरू कैसे काम करते थे, उनका दफ्तर, उनकी मेज-कुर्सी, उनका शयन-कक्ष, उनकी किताबें सब कुछ यथावत रखी थीं। उनके विरोधी उनसे चिढ़ते थे। उन्ही में से एक मौजूदा प्रधानमंत्री मोदी भी हैं। नेहरू का घोसला उजाड़ कर उन्हें चैन मिला होगा। अच्छी नींद आई होगी। बड़ी मुराद पूरी हुई उनकी। इसीलिए अगले ही दिन वह सीधे हनुमान मूर्ति के अनावरण के लिए गुजरात पहुंचे। संघ के इतिहास में उनका नाम मौर्यवंश के नाशक पुष्यमित्र और बोधिवृक्ष को उखाड़ फेंकने वाले शशांक के साथ जुड़ गया होगा। नागपुर में वैसा ही उत्सव हुआ होगा जैसा 6 दिसम्बर 1992 को हुआ था। 6 दिसम्बर बाबासाहब की पुण्यतिथि थी; 14 अप्रैल जन्मतिथि थी। नेहरू के बाद बाबासाहब का ही नंबर आना है। ऐसे ही ध्वंसात्मक कार्य सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बुनियाद रचेंगे।

भाजपा और मोदी का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हनुमानजी, गणेश जी, रामजी और पण्डे-पुरोहितों द्वारा ही गढ़ा-रचा जाएगा। रामराज गौ-द्विज-हितकारी था। हनुमान जैसे वनवासी वहां पूंछ डुलाने और झाल बजाने के लिए थे। शम्बूक का कत्ल और सीता का निर्वासन रामराज की बुनियाद थी। रामराज का एक ही सन्देश है पूंछ डुलाने वालों के लिए लड्डुओं का इंतजाम हो और ज्ञान की बात करने वालों का कत्लेआम हो। एक दलित और एक ओबीसी (राष्ट्रपति कोविंद और प्रधानमंत्री मोदी) आधुनिक रामराज के हनुमान हो चुके हैं। इनके लिए लड्डुओं की व्यवस्था हो चुकी है। छोटे-छोटे और वानर होंगे, जो हनुमान के संगी साथी हैं। सिर कलम करवाने के लिए तो शम्बूकों की कतारें होंगी, जिन्हें अर्बन नक्सली कहकर ग्रीनहंट में मार गिराया जाएगा या जेलों में ठूंस दिया जाएगा। इसी तरह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की बुनियाद रखी जाएगी। आज नेहरू मेमोरियल विनष्ट किया गया। कल राजघाट पर सावरकर-गोलवरकर की समाधी बनाई जाएगी। राष्ट्रीय आंदोलन की पूरी विरासत को विनष्ट कर देना इनके एजेंडे में है। देखते रहिए चुपचाप आगे-आगे होता है क्या?

– प्रेमकुमार मणि

राम का नाम बदनाम न करो

राजद समाचार डेस्क

चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की नौमी तारीख राम के जन्मदिन के रूप में हर साल मनाया जाता है। राम की कथा रामायण, भारत के किसानों का एक प्रिय विषय रहा है और इसे लेकर भारतीय समाज में जाने कितने रूपों में कितनी कथाएं हैं। कहा जाता है कि कुल मिला कर तीन सौ से अधिक रूपों में रामायण लिखी गई है। हमारे हिंदी क्षेत्र में अवधी में लिखी तुलसीदास की रामायण अधिक प्रचलित है।

राम का अर्थ है सुन्दर या सुहावना। जब इसमें चंद्र जुड़ता है, तब यह पौराणिक राजा दसरथ के बेटे का नाम हो जाता है, जो उनके चार बेटों में बड़े थे। दसरथ हिन्दुओं के पौराणिक चार युगों में क्रम से दूसरे युग त्रेता में हुए थे जो अवध या अयोध्या के राजा थे। राम की कथा इतनी सुन्दर और दिलचस्प है कि कोई भी इसमें आनंद ले सकता है। वह गुरु विश्वमित्र के यहाँ पढ़ने बिहार के बक्सर आते हैं। मिथिला के राजा जनक की बेटी सीता के स्वयंवर में भाग लेते हैं और धनुष-भंग परीक्षा में सफल हो कर उस सीता से विवाह करते हैं जो जनक को खेत में मिली थी। सीता अयोनिजा हैं, अज्ञातकुलशील। लेकिन राम विवाह करते हैं। उनके अभिराम आचरण से लोग खुश हैं। जब राम को राजा बनाया जाना था, तब परिवार में अंतर्कलह होता है और राम को चौदह वर्षों के लिए वनवास जाना होता है। उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी साथ होते हैं। जंगल में राम का जीवन वनवासियों के साथ गुजर रहा है। वह एक अलग दुनिया है जिनसे राम का साक्षात्कार होता है। यहीं उनकी सीता का लंका का राजा अपहरण करता है और फिर एक रोमांचक युद्ध के बाद राम उसे मुक्त कराते हैं। रावण मारा जाता है। अपने आखिरी दौर में राम अयोध्या के राजा बनते हैं और उनका रामराज चलता है, जिस पर अलग-अलग व्याख्याएं हैं। एक तबका रामराज को आदर्श मानता है, क्योंकि वह गौ-द्विज हितकारी है। दूसरा तबका राम को शूद्र शम्बूक के वध करने और सीता को निर्वासन देने की आलोचना करता है। यह हमारा खूबसूरत सांस्कृतिक लोकतंत्र है, जिसमें विमर्शों की आज़ादी है। यही कारण है कि सदियों से राम का चरित्र लेखकों, कवियों और रंगमंच से जुड़े लोगों को काफी आकर्षित करता है। तुलसीदास ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा है, तो अल्लामा इकबाल ने इमामे-हिन्द। वह गांव कस्बों महल-झोपड़ियों में विविध रूपों में दिन रात चर्चित होते हैं। कबीर के निर्गुण राम अलग हैं, जो अजन्मा और अमर हैं। वह उनके यूटोपिया अमरदेस के केन्द्रक हैं।

तो कहने का अर्थ यह कि राम कई रूपों में भारतीय जनमन की धड़कन हैं और कुल मिला कर वह अमन-चैन और भाईचारे का संदेश देते हैं। यही रामत्व है। उनकी कथा पर आधारित जो रामलीलाएं होती हैं, उसका सबसे आकर्षक रूप भरत मिलाप होता है। जिस भरत के कारण उनका निर्वासन होता है उसी भरत को प्रेमपूर्वक गले लगाते देख कर लोगों की आँखें हर वर्ष नम होती हैं।

लेकिन हिंदुत्व के नाम पर हिन्दुओं को कट्टर बनाने पर उतारू आरएसएस-भाजपा के लोग रामनवमी के त्यौहार को हिंसा, तनाव और कलह में बदल देने पर इस वर्ष हर जगह उतारू दिखे। अपना शौर्य और वर्चस्व प्रदर्शित करने के लिए संघ-भाजपा में इसी दिन को चुना। राम के नाम पर कोहराम खड़ा कर दरअसल वह अपनी राजनीति कर रहे थे। राम भी युद्ध करते हैं। वह धर्मयुद्ध था, मुक्ति का युद्ध था। अन्याय के विरुद्ध युद्ध था। वह लंका पर राज करने नहीं गए थे, अपनी सीता को मुक्त करने गए थे।

भाजपा के सावरकरवादी हिंदुत्व की वैचारिकी का मूल है हिन्दुओं का सैन्यीकरण और राजनीति का हिन्दुकरण। इसके विपरीत समाजवादी ताकतें भारत के चतुर्मुखी विकास और एक धर्मनिरपेक्ष लोकतान्त्रिक गणराज्य के फलसफे की राजनीति करती है, जो हमारे संविधान के अनुकूल है। भाजपा भारतीय संविधान की मर्यादा को हर जगह भंग करती है। राम के नाम पर राजनीति करने का उसका एकमात्र मकसद भारतीय राजनीति को पूंजीवादियों और सामंतवादियों के पाले में डाल देना है। अपने वास्तविक रूप में आने में उसे लाज आती है, इसलिए राम का नकाब डाल कर आती है।

श्रीलंका में आर्थिक तबाही

हमारा पड़ोसी श्रीलंका कंगाल हो चुका है। जनता की तबाही इसी से समझ सकते हैं कि चावल पांच सौ रुपए किलो और चीनी नौ सौ रुपए किलो बिक रहे हैं। गरीबों और बंधी हुई आमदनी वालों पर क्या गुजर रही होगी इसका केवल अनुमान ही किया जा सकता है। आर्थिक तबाही की लपटें राजनीति को भी अपने दायरे में ले चुकी हैं। खबर है कि पूरी कैबिनेट ने सामूहिक स्तर पर इस्तीफा कर दिया है।

श्रीलंका की आर्थिक स्थिति हमेशा ऐसी ही नहीं थी। 2014 तक उसकी आर्थिक स्थिति सामान्य से कुछ अधिक ठीक थी। लेकिन वहां की राजनीति पर परिवारवाद और लोकलुभावन वायदों की प्रवृत्ति बहुत दिनों से हावी है। वहां की केंद्रीय सरकार में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कृषि मंत्री और वित्त मंत्री एक ही राजपक्षे परिवार के हैं। जानकारी के अनुसार दर्जनों महत्वपूर्ण पदों पर एक ही परिवार के लोग बैठे हुए हैं। सरकारी खर्चे बेशुमार हैं। पिछले दो वर्षों से कोरोना महामारी के कारण विदेश व्यापार बुरी तरह

प्रभावित हुआ और मजदूर अपने घरों में बैठने के लिए मजबूर हो गए। प्रति व्यक्ति आय जब कमजोर होगी तब राष्ट्रीय आय भी प्रभावित होगी ही। नतीजा यह हुआ कि विदेशी मुद्रा भंडार लगातार कमजोर होता गया। श्रीलंका को डीजल-पेट्रोल बाहर से मंगाना होता है और उसके चाय-व्यापार से विदेशी मुद्रा हासिल होती है। इन सबके बीच वहां की राजनीति में लोकलुभावन वायदों की बीमारी लगी हुई है, जो लगातार बढ़ती ही गई है। मौजूदा सरकार ने टैक्स में कई तरह की छूट देकर आयकर देने वाले मध्यवर्ग को खुश करने की कोशिश की, ताकि उनका वोट हासिल किया जा सके। वोट तो हासिल हो गये, लेकिन एक फ़िल्मी गीत की एक लड़ी है - मुस्कुराए तो मुस्कुराने के क़र्ज़ उतारने होंगे। श्रीलंका सरकार वही कर्ज उतार रही है। तबाही का सबसे बड़ा बोझ गरीब जनता को उठाना पड़ रहा है। राष्ट्रपति राजपक्षे को लेकर कई तरह की अफवाहें उठ रही हैं।

श्रीलंका की कंगाली और तबाही से भारत को समय रहते सबक लेने की जरुरत है। श्रीलंका तो आकार और आबादी में छोटा देश है। भारत उससे बहुत बड़ा है। राजकीय खर्चे जिस तरह मोदी राज में हो रहे हैं वह हमें लंकाई कंगाली की तरफ ही धकेल रही है। पूंजीपतियों को दाएं-बाएं रखने वाले प्रधानमंत्री को उनसे सावधान होने की जरूरत है। गांधी जी कहते थे कोई काम करने के पहले उस आदमी का ध्यान करो जिसे सबसे तंग स्थिति में तुमने देखा है और फिर सोचो कि जो काम तुम करने जा रहे हो, क्या इससे उसके जीवन में कोई तब्दीली आ सकती है। वंचित और निर्धन सामाजिक समूहों को केंद्र में रख कर हमें आर्थिक नीतियां बनानी चाहिए। तामझाम और विलासता पर सरकारी धन का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। यहां स्थिति यह है कि अस्पताल और स्कूलों में आवश्यक सुविधाएं नहीं हैं और अफसरों और मंत्रियों के बंगले रोज सजाए जा रहे हैं। कुल मिला कर यह कि श्रीलंका की भयावह आर्थिक स्थिति से पूरी दुनिया को सबक लेनी चाहिए।

पाकिस्तान में तख्ता-पलट

पाकिस्तान में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के इमरान अहमद खान नियाजी, जो इमरान खान के नाम से मशहूर हैं, की सरकार पिछले 9 अप्रैल को पार्लियामेंट में अविश्वास प्रस्ताव के एक सियासी ड्रामे के साथ विदा हो गई और पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज़) के शहबाज़ शरीफ पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री बन गए। पाकिस्तान के इतिहास में तख्ता-पलट होते रहे हैं। यह पहली दफा है जब अविश्वास प्रस्ताव के साथ कोई सरकार अपदस्थ की गई है। लेकिन इसके पीछे जो घटनाएं हुई हैं, वह फौजी तख्ता-पलट से अधिक रोमांचक है।

सिलसिला इमरान के रूस जाने से होता है। लगभग इसी वक्त रूस उक्रेन पर हमला कर देता है। पाकिस्तानी अख़बार डॉन की मानें तो पिछले 7 मार्च को जब वाशिंगटन में पाकिस्तान के राजदूत असद मजीद खान की विदाई पार्टी चल रही थी तब दक्षिण एशिया मामलों से जुड़े अमेरिकी अधिकारियों डोनाल्ड लू और लेस्ली विगेरिये ने इमरान खान के विदाई का नक्शा बना लिया था। अविश्वास प्रस्ताव पेश होने के पूर्व पाकिस्तान टीवी पर इमरान खान ने जो देश के नाम सम्बोधन किया था उसमे भी उन्होंने अमेरिकी दखलंदाज़ी की चर्चा की थी। वह डरे-सहमे हुए थे। उनके अनुदेश पर पाकिस्तानी संसद को भंग कर दिया गया। पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट में मामला गया और कोर्ट ने पुनः संसद बहाल कर दी। बावजूद इसके इमरान खान दाव-पेंच खेलते रहे। कहा जाता है कि 9 अप्रैल की रात इमरान खान के बनिगाल स्थित आवास पर एक हेलीकॉप्टर अचानक से उतरता है और उस पर से दो फौजी अफसर निकल कर इमरान से मिलते हैं। इमरान से कुछ कहा जाता है और उसे मानने से वह इंकार करते हैं कि फौजी अफसर उन्हें थप्पड़ जड़ देता है। प्रधानमंत्री को थप्पड़! यह कैसा रिवाज़, कैसी परिपाटी है! ओह! उसी रात अविश्वास प्रस्ताव के पास किए जाने का नाटक होता है और इन सब के बाद शहबाज़ शरीफ प्रधानमंत्री बनाये जाते हैं।

शाहबाज़ शरीफ और कोई नहीं, पूर्व प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ के छोटे भाई हैं जो पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज़) से जुड़े हैं। 23 सितम्बर 1951 को जन्मे सत्तर वर्षीय शाहबाज़ को गंभीर राजनेता नहीं माना जाता। अपनी दूसरी प्रवृत्तियों के लिए खासे चर्चित शाहबाज़ ने कुर्सी संभालते ही भारत विरोधी कश्मीरी राग अलापना शुरू कर दिया है। कश्मीर का मामला पाकिस्तान और भारत दोनों के थिअक्रेटिक राजनीतिज्ञों का प्रिय मसला रहा है। एक को वहां के अशरफ़ मुसलमानों की चिंता है, दूसरे को वहां के अशरफ़ हिन्दुओं यानि पंडितों की। कश्मीरियों की चिंता इन दोनों को नहीं है।

बहरहाल, पाकिस्तान की राजनीति पर एक बार फिर अमेरिकी दबदबा कायम हो गया है। पाकिस्तान हमारा पड़ोसी मुल्क है और 1947 के 15 अगस्त तक वह हमारे देश का हिस्सा था। हम उसे कभी बदहाल नहीं देखना चाहते। उसकी खुशहाली हमारी भी खुशहाली होगी। लेकिन पाकिस्तान के हुक्मरानों और राजनेताओं ने अपने मुल्क की हालत खुद ऐसी बनाई है। इसका मूल कारण है कि वहां की सियासत पर पुराने जमींदार और मौलवी हावी हैं। पाकिस्तान शुरू से इस्लामिक राष्ट्र नहीं था। 1957 में वह घोषित तौर पर इस्लामिक राष्ट्र बना और धीरे-धीरे वहां लोकतान्त्रिक रिवाज एक-एक कर ख़त्म होने लगे। पाकिस्तान में आज जो हो रहा है वह दुखद है। हम वहां मजबूत लोकतंत्र के आकांक्षी हैं। बाइस करोड़ की आबादी वाला मुल्क अमेरिकी इशारों पर चल रहा है यह दक्षिण एशिया की राजनीति के लिए भी ठीक नहीं है। अमेरिका भारत को भी अपने राजनीतिक गिरफ्त में लेना चाहता है। ट्रम्प के दौर में हमारे प्रधानमंत्री तो पूरी तरह अमेरिका के समक्ष बिछ गए थे। यहां तक की उनके चुनाव प्रचार में भाग लेकर भारत की तौहीन करवाई थी। आज भी भारत की राजनीति को धर्मकेंद्रित बनाने की कोशिशें हो रही हैं। हमें अपने मुल्क को पाकिस्तान नहीं बनने देना है। ■

आंकड़े झूठे हैं, दावे किताबी हैं

तेजस्वी प्रसाद यादव

अध्यक्ष महोदय, वर्ष 2022-23 के बजट के वाद-विवाद में बोलने का मौका दिया इसके लिए आपको धन्यवाद देते हैं। जब भी बजट आता है राज्य या देश का, तो पहले देखा जाता था कि लोगों में एक्साइटमेंट होता था, उत्सुकता होती थी कि सरकार देश के लोगों के लिए क्या दे रही है और किस दिशा में आने वाले समय में क्या काम करेगी, लेकिन अब लोगों को उम्मीद और विश्वास नहीं रह गया है। अब बजट जो है, भारत सरकार का भी बजट आता है तो उसमें पहले रेलवे का अलग होता था और आम बजट जो होता था वह अलग होता था। रेलवे को तो हटा ही दिया गया, खत्म ही कर दिया गया। अब जब भारत सरकार का भी बजट आता है तो लोगों को पता नहीं चलता है क्या बजट में आया और बिहार सरकार का बजट आया है तो इस पर कई सहयोगियों ने ही उप मुख्यमंत्री जी के दल के ही प्रदेश अध्यक्ष ने इस पर सवाल भी उठाया कि बजट का पैसा तो खर्च ही नहीं हो पाता है, जो सच्चाई है और हमलोग अगर सेन्ट्रल एजेंसियों की बात करें, चाहे नीति आयोग हो, चाहे सी.ए.जी. हो या और जितनी भी संस्थाएं हैं जो आकलन करती रहती हैं और भी एजेंसियां जो हैं जो लगातार रिसर्च करती रहती हैं, हकीकत बताने का काम करती है। अगर वह देखें तो बड़ा निंदनीय लगता है बिहार का बजट, लगातार जिस तरह से डबल इंजन की सरकार काम कर रही है, लोग उम्मीद खो बैठे हैं, लोगों की अब दिलचस्पी नहीं रह गई, उनको लगता है यह बजट कागज का पुलिन्दा है और पढ़ दिया जाता है। लेकिन गांव-देहात, गली-कूचों तक जो भी योजनाएं हैं या जो सही काम है वह नहीं पहुंच पाता।

चाहे किसानों की बात करें, चाहे मजदूरों की बात करें, चाहे गरीबों की बात करें, चाहे नौजवानों की बात करें, चाहे रोजगार के सवाल की बात करें, चाहे इंडस्ट्री की बात करें या एजुकेशन की बात करें, शिक्षा, स्वास्थ्य, हेल्थ की बात करें तो आप देखिएगा, सभी मुद्दों पर लोग निराश हैं। उनमें एक आक्रोश पैदा होता जा रहा है। यहां तक कि जो सरकारी कर्मचारी हैं वह भी परेशान हैं, हताश हैं। अब उप मुख्यमंत्री जी ने 2 लाख 37-38 हजार करोड़ का बजट पेश किया है। हमने लगातार बजट को दिखवाया कि बजट में नया क्या है और पिछली बार के बजट में कितना खर्च हुआ और कितना काम हुआ। हालांकि बजट की बात की जाए तो its about revenue or expenditure मतलब पैसा आएगा कहां से, कैसे आएगा और जो पैसा आएगा उसको हम खर्च कहां करेंगे, किस दिशा में करेंगे, किन

योजनाओं के तहत करेंगे, ये पूरा होता है महोदय बजट। अध्यक्ष महोदय, अब आप शायरी पसंद करते हैं तो हम इस बार शायरी अच्छी-खासी लेकर आये हैं। पहली शायरी अगर कहें तो

"तुम्हारी फाइलों में गांव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आंकड़े झूठे हैं यह दावा किताबी है।"

महोदय, हम अपनी बात नहीं कह रहे। जो अखबारों में जो चर्चाएं चली हैं, जो बातें चली हैं अब इस पर जरा गौर करें। शिक्षा की गुणवत्ता के मामले में केरल सबसे अच्छा और बिहार सबसे खराब है। यह हकीकत है। जितनी भी एजेंसियां हैं उन सबकी रिपोर्ट है जो हम आपके सामने लाना चाहते हैं। बड़े राज्यों में पश्चिम बंगाल अव्वल और बिहार सबसे नीचे है। महोदय, आधारभूत साक्षरता सूचकांक में फाउन्डेशनल लिटरेसी इंडेक्स में बड़े राज्यों में पश्चिम बंगाल शीर्ष पर है और बिहार सबसे नीचे। यह देखिये महोदय, सभी राज्यों को 17 मानकों पर आंका बिहार 92 अंक के साथ देश में सबसे नीचले पायदान पर। महोदय, आप देखिएगा रिपोर्ट देश के सबसे ज्यादा ग्रेजुएट जो हैं वह बेरोजगार हैं। How much do farmer earns मतलब कि किसान की कितनी आय होती है, बिहार उसमें सबसे निचले पायदान पर है यानी बिहार के किसान की आय जो है देश भर में सबसे कम है। आप देखिएगा कि सी.एन.आई.ई. का खुलासा बिहार में 23 राज्यों में सबसे ज्यादा बेरोजगारी मतलब 23 राज्यों में देखा जाएगा तो बिहार में सबसे ज्यादा बेरोजगारी

है। अभी गरीबी न्यूट्रिशियन, मैटरनल हेल्थ्स, स्कूल इंडेक्स, इलेक्ट्रिसिटी, कुकिंग और फ्यूल के मामले में बिहार देश में सबसे नीचे है। नीति आयोग की रिपोर्ट में भी देखिएगा सारा जो है बिहार को स्कोर ही नहीं मिला 6 सबसे नीचे, हर जगह यही है। डेवलपमेंट इंडेक्स में देखा जाए तो बॉटम 5 स्टेट्स में बिहार सबसे नीचे। अब इसपर ज्यादा कुछ नहीं यह तो सबलोग जान रहे हैं लेकिन बिहार देश का सबसे गरीब राज्य है जहां 52 फीसदी आबादी गरीब है, यह सच्चाई है।

अब महोदय सबसे ज्यादा गरीब बिहार जबकि 15 साल से भी ज्यादा से डबल इंजन सरकार के लोग राज कर रहे हैं। बजट का आकलन या बजट का जो प्रारूप है हमेशा वह बढ़ता जा रहा है। आप देखिएगा महोदय कि सरकार अपनी ही पीठ बार-बार थपथपाती है कि बजट देखो पहले क्या था अब हमने देखो 2 लाख 37 हजार करोड़ का कर दिया। लेकिन 15 साल से भी ज्यादा वही मुख्यमंत्री, केन्द्र में भी सरकार लेकिन क्या स्थिति है। महोदय, आपने तो मुख्यमंत्री जी का बयान देखा ही होगा, उन्होंने कहा अब तो नीति आयोग ने ही गरीब बता दिया, सबसे पिछड़ा बता दिया तो हमको स्पेशल राज्य का दर्जा दे दो तो इसके लिए क्या पीठ थपथपानी चाहिए मुख्यमंत्री जी की ? ये सवाल जो है क्या मुख्यमंत्री जी की पीठ थपथपाई जाए और विशेष राज्य का दर्जा मांग कौन रहा है, वह तो पार्टनर हैं न गर्वनमेंट आफ इंडिया में। अपने ही पार्टनर से मतलब बिहार के लिए विशेष राज्य का दर्जा मांग रहे हैं या अमेरिका के राष्ट्रपति से, रूस के राष्ट्रपति पुतिन से मांग रहे हैं विशेष राज्य का दर्जा देगा कौन? लेकिन जब हमने परसों ही अपने अभिभाषण में कहा कॉन्ट्रास्टिंग कैरेक्टर है, कॉन्ट्रास्टिंग आइडियोलॉजिज हैं, सबके अलग-अलग मतलब हैं इस क्षेत्र में तो उसमें हमने यह भी बताया कि उप मुख्यमंत्री जी कहते हैं कि कोई जरूरत नहीं है बिहार को विशेष राज्य के दर्जे की और मुख्यमंत्री जी कहते हैं कि बिहार को विशेष राज्य के दर्जे की जरूरत है। मतलब ये लोग, चर्चा देखिये 52 फीसदी गरीब लोग हैं बिहार में और बजट हमेशा बढ़ता जा रहा है इतना लाख करोड़, और गरीबी सबसे ज्यादा। यह तो आप खुद मान रहे हैं, यह तो सरकार खुद मान रही है कि बिहार सबसे गरीब है और गरीब होने का श्रेय किसको दिया जाए फिर, जिन्होंने 15 साल से भी ज्यादा 17 साल तक राज किये तो, डबल इंजन की सरकार को ही न बोलिएगा, किसको बोला जाए। महोदय, यह स्थिति जो है पूरे तरीके से अब देखिएगा कि बिहार के 38 में से 22 जिलों में आधे से अधिक लोग गरीब हैं, यह स्थिति बनी हुई है और इन 11 जिलों में 60 फीसदी से भी ज्यादा लोग गरीब हैं जैसे किशनगंज हो गया, अररिया हो गया, मधेपुरा हो गया, पूर्वी चम्पारण हो गया, सुपौल हो गया, जमुई हो गया।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय..आप देखिये बजट की जहां तक बात करते थे, हमारे पास सी.ए.जी. की रिपोर्ट है। हम चाहेंगे कि उप मुख्यमंत्री जी थोड़ा गौर करें। सी.ए.जी.की रिपोर्ट में अगर उप मुख्यमंत्री जी देखें तो अध्याय 5 में पेज नंबर 32 पर अगर आप जाइएगा, उप मुख्यमंत्री जी तो इसमें वर्ष 2019-20 के बारे में विनियोग लेख दिया हुआ है उसमें अगर आप पढ़ेंगे तो मूल अनुदान जो है वर्ष 2019-20 में था वह दो लाख पांच सौ दो करोड़ रुपये का था और कुल अगर बात की जाए तो 2 लाख 28 हजार 487 करोड़ रुपये का था। यह हकीकत है लेकिन आप लास्ट के कॉलम में जाइएगा तो बचत भी होती है वह 80 हजार करोड़ खर्च ही नहीं कर पाये आप लोग। अगर इसका हम डिपार्टमेंट वाइज आंकड़ा निकालें तो मान लीजिये जैसे कृषि विभाग है, कृषि विभाग में अगर आप देखें महोदय तो 41 फीसदी पैसा खर्च ही नहीं किया गया, सहकारिता विभाग में देखा जाए तो 74 परसेंट पैसा खर्च नहीं किया गया, पंचायती राज विभाग में देखा जाए तो 36 फीसदी खर्च नहीं, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग में देखा जाए तो 50 फीसदी खर्च नहीं, स्वास्थ्य विभाग में 31 परसेंट पैसा खर्च ही नहीं किया गया, शिक्षा विभाग में 32 फीसदी खर्च नहीं किया गया, अल्पसंख्यक कल्याण विभाग में 51 फीसदी पैसा खर्च नहीं किया गया। ऐसे देखा जाए तो टोटल मान लीजिये कि 80 हजार करोड़ खर्च ही नहीं कर पाये। बजट जो आप लोग पेश करते हैं तो वह खर्च क्यों नहीं हो पाता यह बिहार की जनता जानना चाहती है। बेरोजगारी है, इतने पद रिक्त हैं शिक्षा विभाग, हर विभाग में तो आप क्यों नहीं नौकरी देकर शिक्षा विभाग में, स्वास्थ्य विभाग में जॉब देने का काम करते हैं जब पैसा बचा हुआ है तो यह देना न चाहिए, यह सारा काम करना चाहिए। आखिर क्यों नहीं कर पाते और खूबसूरती यह देखिये महोदय, अगर 33 पेज पर जाइएगा तो मेरा कमेंट नहीं है। उप मुख्यमंत्री जी आप वित्त मंत्री हैं। यह सी.ए.जी. का कमेंट है उसी पेज पर ''किसी अनुदान के अन्तर्गत लगातार बचत का होना इस बात का द्योतक है कि या तो कुछ योजनाओं/कार्यक्रमों का क्रियान्वयन नहीं हुआ या क्रियान्वयन धीमी गति से हुआ''। यह मेरी रिपोर्ट नहीं महोदय, यह तो सी.ए.जी.का कमेंट है। कुछ अनुदानों के अंतर्गत लगातार हुई बचतें तथा विशिष्ट बचतें एवं ये है जो मैंने आपको विभाग के सारे गिनाये हैं।

अब इंटरेस्टिंग यह है सी.ए.जी.की रिपोर्ट में 34 नंबर पेज में कि वर्ष 2019-20 के दौरान कुल 21 हजार 88 करोड़ का अनुपूरक अनुदान कुल व्यय का 14 प्रतिशत जो कुछ प्रावधानों के अनावश्यक सिद्ध हुआ, क्योंकि वर्ष के अंत में मूल प्रावधन के विरूद्ध ही विशिष्ट बचतें हुई हैं तथापि अनुपूरक अनुदान प्राप्त किया गया। कुछ उदाहरण हैं जो हम बताना चाहेंगे मतलब आपका जो मूल बजट है उसमें इतनी बचत हुई तो फिर अनुपूरक क्यों लेकर आते हैं आप लोग? मान लीजिये जैसे राजस्व विभाग का एक एग्जाम्पल हम देते हैं कि मूल था 2 हजार 939 करोड़ रुपया और टोटल वास्तविक व्यय हुआ 2 हजार 152 करोड़ रुपया यानी 800 सौ करोड़ रुपया तो आलरेडी बचा हुआ है तो आप लोग 533 करोड़ का अनुपूरक फिर क्यों लेकर आये? मतलब मूल में से ही मान लीजिए बजट का है सब डिपार्टमेंट को हमको एक हजार रुपया खर्च करना है तो मान लीजिए एक हजार में से इन्होंने केवल छः सौ रुपया खर्च किया, चार सौ

रुपया बचा तो ये अलग से फिर आ जाते हैं पैसा लेने सदन के अंदर कि हमको दो सौ रुपया और दो, इसका मतलब क्या है ?

महोदय, ऐसे ही अगर हम भवन निर्माण में अगर आप देखें, तो 4 हजार 582 करोड़ रुपये का था अनुपूरक ये लोग ले आये 754 करोड़ रुपये का बल्कि वास्तविक बचत थी 1385 करोड़ रुपया बचा हुआ था। ऐसा कितना देखिएगा जो यहां बचत है जिसका कोई काम नहीं किया जा रहा है। अब इस पर बात की जाए हमारे पास पिछले बजट का कल तक का खर्च करने का डेटा है यानी डिपार्टमेंटवाइज एक्सपेंडिचर की लिस्ट हमारे पास है जो 03 मार्च, 2022 तक का है डिपार्टमेंटवाइज एक्सपेंडिचर।

लोग कहते हैं कि पैसा जाता कहां है? ये क्या इन्फ्लेटिड करके बजट बनाया जाता है या भ्रष्टाचार की बलि चढ़ जाता है या मार्च लूट, जरा अधिकारियों से उप मुख्यमंत्री जी पूछिएगा, हमको भी नहीं पता था मार्च लूट क्या होती है। मार्च लूट यह होती है कि हैन्ड टू हैन्ड, गायब, कहां गया पैसा? वह तो सी.ए.जी.की जो रिपोर्ट है इसमें आप देखें सी.ए.जी.का वित्त लेखा खंड-1 में अगर आप जाइएगा उप मुख्यमंत्री जी तो इसमें साफ है कि 80 हजार करोड़ रुपये का बिहार सरकार ने वर्ष 2019-20 में हिसाब-किताब दिया ही नहीं है।

अब इसमें देखा जाए तो लास्ट बजट जो था, पिछला बजट जो था दो लाख अठारह हजार तीन सौ दो का था और कल, 03 मार्च तक जो है केवल एक लाख पांच हजार एक सौ सात रुपया ही खर्च किया गया है। यह सच्चाई है। आप जाइए डिपार्टमेंटवाइज एक्सपेंडिचर में कल तक का है, 03 मार्च तक का। आप केवल एक लाख पांच हजार एक सौ सात यानी 48 फीसदी ही पैसा खर्च हुआ और 48 फीसदी तब हुआ जब आप ट्रांसफर टू पी.एल., पी.डी. लिये तब 48 फीसदी हुआ, अगर पी.एल.,पी.डी. और अदर बी.टी. हटा दें तो केवल जो खर्चा हुआ वह केवल 74 हजार 468 का हुआ है जो कि 34 फीसदी है। अब आप बताइये आप फिर ले आये हैं लगभग 2 लाख 38 हजार करोड़ का। महोदय, आश्चर्य है, लोग देखते हैं, सुनते हैं तो लोग कहते हैं कि पैसा जाता कहां है? ये क्या इन्फ्लेटिड करके बजट बनाया जाता है या भ्रष्टाचार की बलि चढ़ जाता है या मार्च लूट, जरा अधिकारियों से उप मुख्यमंत्री जी पूछिएगा, हमको भी नहीं पता था मार्च लूट क्या होती है। मार्च लूट यह होती है कि हैन्ड टू हैन्ड, गायब, कहां गया पैसा? वह तो सी.ए.जी.की जो रिपोर्ट है इसमें आप देखें सी.ए.जी.का वित्त लेखा खंड-1 में अगर आप जाइएगा उप मुख्यमंत्री जी तो इसमें साफ है कि 80 हजार करोड़ रुपये का बिहार सरकार ने वर्ष 2019-20 में हिसाब-किताब दिया ही नहीं है। आप बताइये 80 हजार करोड़ का कोई हिसाब-किताब नहीं है कि बिहार सरकार ने उस पैसे का क्या किया। अब बताइये क्या हो रहा है भाई, इसीलिए 80 घोटाले हो रहे हैं। कोई अधिकारी, कोई मंत्री किसी पर जो है...(हस्तक्षेप)

अब तो सी.ए.जी.पर ही सवाल उठाया जा रहा है। मतलब आप अगर...अध्यक्ष महोदय, यह कोई मतलब नहीं हुआ। हम तो अपनी बात नहीं बोल रहे हैं, हम कोई कल्पना या एज्युम नहीं कर रहे हैं कि ऐसा किया गया होगा। जो साइंटिफिक डेटा है, जो संवैधानिक एजेंसियां हैं उसी की हम बात कर रहे हैं तो उसपर भी आपलोग सवाल उठा रहे हैं, मतलब सच सुनने की किसी को ताकत नहीं है तो इसे मिटवा दीजिए। बिजेन्द्र जी कह रहे थे, ये हमारे अभिभावक हैं, अनुभवी हैं, सबकुछ रह चुके हैं बस मुख्यमंत्री नहीं बने हैं, लेकिन हम वह नहीं कहना चाहते हैं, हम यह कहना चाहते हैं....(हस्तक्षेप)

अध्यक्ष महोदय, एकदम यह सीखने की चीज है, सब कुछ है, सबको जानना चाहिए। अब हम तो चाहेंगे कि जब भी डिबेट चल रही होती है, जब वाद-विवाद चल रहा हो तो जो भी स्पीकर जिनको सभी दल के लोगों को मौका मिलता है, जो उनके प्रश्न हैं, जो उनकी चिंताएं हैं वह मंत्री जी को दूर करना चाहिए, लेकिन मंत्री जी क्या लाते हैं अधिकारी की पढ़ी हुई रिपोर्ट, लिखी हुई रिपोर्ट वे पढ़ देते हैं और वह खत्म हो जाती है। हम चाहते हैं कि हमारी चिंता दूर कीजिए तब न पॉजिटिव एक डिबेट होगी, तब न उसका फायदा होगा। अब कौन क्या बोल रहा है, नहीं बोल रहा है और यहां से लोग भाग खड़े होते हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमलोग तो आपकी बात का हमेशा पालन करते ही हैं, करेंगे भी, लेकिन विषय जो है इस पर आना चाहिए। आज हम डेटा लाये हैं, आंकड़े जो हैं वह सदन को पता होने चाहिए कि आखिर वास्तविकता क्या है? अगर हम कोई झूठ बोल रहे हों, आंकड़े गलत हों तो मंत्री जी या सरकार अपने वक्तव्य में उसे हटा सकती है। अब बिहार विधनसभा में बजट के दौरान वित्त मंत्री तारकिशोर जी ने कहा कि बिहार का पर कैपिटा इनकम 50,555 रुपये है, जबकि भारत का लगभग 86,659 रुपये है। अब मंत्री जी के अनुसार बिहार जो है भारत से अच्छा काम कर रहा है, अब हमको यह कल्पना के परे है कि जब बिहार का ही पर कैपिटा इनकम 50,555 रुपये है और भारत का 86,659 रुपये है तो बिहार भारत से कैसे अच्छा काम कर रहा है, लेकिन इनके अनुसार बिहार अच्छा काम कर रहा है। महोदय, अब ये बातें भ्रमित करने वाली हैं क्योंकि बिहार पहले भी प्रति व्यक्ति आय रैंक में 33वें स्थान पर था और अभी भी 33वें स्थान पर ही है। स्टेट जी.डी.पी. में 14वें स्थान पर है और मानव विकास सूचकांक में 36वें स्थान पर है अंतिम में, यह सच्चाई है, यह नीति आयोग पढ़ लीजिए और वित्त मंत्री जी

ने यह भी कहा कि बिहार का शहरीकरण का स्तर वर्ष 2011 में 11.3 फीसदी था, अब बढ़कर 15.3 फीसदी हो गया। महोदय, इन्होंने ये बातें कही, अब हकीकत क्या है अगर हम वर्ष 1981 की बात करें, छोड़िये वर्ष 2011 में 11.3 फीसदी था तो वर्ष 1981 में शहरीकरण के आंकड़े को देखें तो पाते हैं कि बिहार में उस समय 9.59 फीसदी था, जबकि भारत का 22.89 फीसदी था तो आप समझिये कि वर्ष 2011 में जहां बिहार में शहरीकरण का आंकड़ा 11.29 फीसदी था वहीं भारत का 31 फीसदी है। आज के दिन बिहार में शहरीकरण की दर 15.3 फीसदी है तो भारत की 35.4 फीसदी है, कितना पीछे हैं आप और आप कह रहे हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं और अर्थ होता है कि शहरीकरण के मामले में बिहार पूरे देशभर में सबसे फिसड्डी राज्य है, ये आंकड़े बताते हैं।

अब आप देखिएगा कि मल्टी डायमेंशनल पॉवर्टी दर बिहार में 51.91 है, जो देश में सबसे ज्यादा है और आप बताते हैं कि विकास किया। 12वें 2005 से 10, 13वें में 2010 से 15, 14वें में, 15वें में,फाइनेंस कमीशन देखते हैं तो पाते हैं कि बिहार ऐसा दूसरा राज्य है जिसको सबसे ज्यादा रेवेन्यू कलेक्शन का पैसा मिला और 12वें फाइनेंस कमीशन में 11 परसेंट, 13वें में 10.9 परसेंट, 14वें 9.6 और 15वें में 10.6 मिला फिर भी बिहार जो है अन्य राज्यों के मुकाबले सबसे पीछे क्यों है? जब सबसे ज्यादा रेवेन्यू कलेक्शन में दूसरे नम्बर पर राज्य में था तो सबसे फिसड्डी राज्य नीति आयोग की रिपोर्ट में, हरेक सूचकांक में बिहार सबसे पीछे क्यों है, इसका तो जवाब देना चाहिए। अब प्रति व्यक्ति आय में 33वें स्थान पर, मानव सूचकांक (एच.डी.आई.) में 36वें स्थान पर, जी.डी.पी. में 14वें स्थान पर बिहार में लेबर फोर्स पार्टीसिपेशन में सिर्फ 9 परसेंट है, वहीं फिमेल फोर्स पार्टीसिपेशन में केवल 4.3 है, यह बिहार की सच्चाई है। बिहार में क्रेडिट रेश्यो डिपॉजिट सिर्फ 32 फीसदी है, जबकि नेशनल एवरेज 75 परसेंट है। बिहार की टोटल अर्निंग को देखें तो पता चलता है कि एक्सपेंडिचर का 78 परसेंट, यह आप सब लोग ध्यान से सुनिएगा। टोटल एक्सपेंडिचर जो है 78 परसेंट केन्द्र से आता है और 22 परसेंट टैक्स कलेक्शन बिहार सरकार करती है और वह एक्सपेंडिचर में डालती है तो बताइये कि 78 परसेंट तो भारत सरकार से आ रहा है और 22 परसेंट में अगर हिसाब किया जाए केवल 22 परसेंट का तो इसका 70 फीसदी हिस्सा जी.एस.टी. और पेट्रोल से आता है और 30 फीसदी हिस्सा रजिस्ट्री से आता है, यानी बिहार में जो हमको टैक्स मिलता है वह केवल जी.एस.टी पेट्रोल/डीजल का है और रजिस्ट्री से जो पैसा आता है वह आता है। अगर यहां इंडस्ट्री लगी होती तो हमारा टैक्स कलेक्शन बढ़ता कि नहीं बढ़ता, क्यों नहीं बढ़ता।

क्या है बिहार में? कुछ भी नहीं है, कोई इंडस्ट्री, कोई कारखाना नहीं है, कोई फूड प्रोसेसिंग यूनिट नहीं है और 22 परसेंट। सोचिए खर्च कितना होता है तो उसे हम बता ही दिये हैं, उसमें से भी लोगों को मिलता क्या है, यह पैसा कहां जा रहा है और किस बात की आपलोग पीठ थपथपा रहे हैं। वहीं बिहार का कमिटेड एक्सपेंडिचर सैलरी, पेंशन देखिएगा तो यह इंट्रेस्टिंग डाटा है। सैलरी में, पेंशन में इंटरेस्ट 34 परसेंट है कितना परसेंट, वहीं बिहार का अर्निंग केवल 22 परसेंट है, न लोगों को पेंशन मिल रही है, न लोगों को सैलरी मिल रही है, न कुछ हो रहा है, यह सच्चाई आंकड़ा है महोदय, मतलब पिछले 17 सालों का औसत देखें तो बिहार एक ऐसा राज्य है जिसे फाइनेंस कमीशन ने 28 परसेंट शेयर दिया तब जाकर यह हाल है और हमलोगों के जमाने में तो सौतेला व्यवहार होता था, सबलोग जान रहे हैं लेकिन 28 परसेंट, इसके बावजूद भी महोदय बिहार की हालत न पढ़ाई, न दवाई, न सिंचाई, न कमाई, न सुनवाई, न सरकारी, सबकुछ बंद है, होती चली जा रही है। सी.ए.जी. की रिपोर्ट देखिए, विभिन्न विभागों में व्यापक भ्रष्टाचार फैला हुआ है, यही है लेकिन कार्रवाई और सुनवाई कहीं नहीं होती है। अब ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स जो शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रति व्यक्ति आय को दर्शाता है उसको देखें तो पाते हैं जहां पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती राबड़ी देवी जी के कार्यकाल में बिहार का स्थान 32वां था और आज 2022 में वह 33वां है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि उस समय के कार्यकाल में दो बार तो राष्ट्रपति शासन लगा तब यह स्थिति है महोदय। आज 33वें पर, पहले थे हमलोग 32वें पर। सबलोग जान रहे हैं कितना सौतेला व्यवहार हुआ। उस समय फाइनेंस कमीशन भी हमलोगों को इतना पैसा नहीं देती थी, स्पेशल पैकेज की बात करें या हरेक योजना, जो अधिकार भी था वो भी कटता रहा था महोदय, तब भी राबड़ी देवी जी की सरकार और उसमें कई राज्य मतलब बिहार और झारखंड एक थे, शुरुआती दौर में, क्षेत्रफल भी बड़ा था और पॉपुलेशन भी बड़ी थी। महोदय, आप समझ सकते हैं। इसलिए तब भी सरकार में लगभग 5 प्रतिशत की विकास दर थी, राबड़ी देवी जी के समय में 5 प्रतिशत की जो विकास दर थी, उस समय भारत की जो जी.डी.पी. थी महोदय, वह 6.5 थी, तब भी हम इतने करीब रहते थे और आज देख लीजिए कितने का गैप है जो पहले मैंने आपको डाटा में बताया। कितना बड़ा गैप होता जा रहा है महोदय।

सौतेला व्यवहार इससे भी पता चलता है कि सेन्टर टैक्सेशन का शेयर राबड़ी जी के कार्यकाल में कम दिया गया जबकि बिहार में लगभग आधे दर्जन से अधिक केंद्र में मंत्री थे उस समय। आधे दर्जन से भी ज्यादा उस समय केंद्रीय मंत्री बिहार के थे महोदय। अब थोड़ा उसको डिफाइन अगर हम करें तो आंध्र प्रदेश को 3507 करोड़ 1998-2000 में मिला वहीं बिहार को केवल 306 करोड़ रुपया मिला, ये हकीकत है। 2000 से 2003 आंध्र प्रदेश को 9790 करोड़ का सेंट्रल ग्रांट मिला वहीं बिहार को 4047 करोड़ मिला, सोचिए 5 हजार करोड़, कोई और राज्य को ज्यादा मिल रहा है। उस समय हमलोगों का ग्रांट फंड जो था सेंट्रल का वह तो बहुत कम था तब भी जो है जी.डी.पी. में और 22वें स्थान पर थे। 2002-03 में आंध्र प्रदेश को नेट लोन में भी 6902 करोड़ रुपये मिला वहीं बिहार को 2849 करोड़ रुपये मिला। पर कैपिटा सेंट्रल असिस्टेंस में भी

2000-01 में आंध्र प्रदेश को 626 मिला वहीं बिहार को रुपये 276 मिला महोदय। कितना बड़ा डिफरेंस होता था, कितना पक्षपात होता था उस समय। बिहार का बजट 2005 में, जो बजट का ये लोग आंकड़ा देते हैं कि हम पिछले साल 218 था इस बार देखो हम 237 कर दिए, इसका हम उत्तर देते हैं कि 2005 में बिहार का बजट 24 हजार करोड़ था और भारत का 4 लाख 53 हजार करोड़ रुपये था, आज 2022 में बिहार का बजट 2 लाख 37 हजार करोड़ है वहीं भारत का 39 लाख 70 हजार करोड़ रुपये है महोदय।

राजद शासनकाल में 1990 से लेकर 2005 तक जो बजट में लगभग 8 गुना की बढ़ोत्तरी हुई और 2005 से 2020 में भी 8 गुना की ही बढ़ोत्तरी हुई। यानी उस समय भी 8 गुना की बढ़ोत्तरी हुई, इस बार भी 8 गुना की बढ़ोत्तरी हुई। यानी बजट जो है आप कह सकते हैं कि समय-समय के साथ बढ़ता रहता है, उतना ही गुना बढ़ा तो अपनी पीठ थपथपाने की इनको कोई जरूरत नहीं है महोदय। अब बात करें :

"अपने चेहरे से जो जाहिर हुआ छुपाएं कैसे,
तेरी मर्जी के मुताबिक नजर आएं कैसे,
लाख तलवारें बढ़ी आती हों गर्दन की तरफ,
सर झुकाना नहीं आता तो झुकाएं कैसे"।

महोदय, ये इंम्पोर्टेंट बातें अब डेवलपमेंट मॉडल की बात करें, मुख्यमंत्री जी की जो फ्लैगशिप योजना है, फ्लैगशिप योजना क्या-क्या है, कृषि रोड मैप, 7 निश्चय, जल-जीवन-हरियाली, महोदय, यह बिहार सरकार के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है, उसको फ्लैगशिप योजना कहते हैं। अब व्यवस्था इतनी, और ये जितनी योजनाएं चल रही हैं महोदय, इसमें देखिएगा एक मंत्रालय की जवाबदेही नहीं है, न किसी पर जिम्मेवारी है, भ्रष्टाचार हो रहा है, किसी पर कार्रवाई नहीं होती है, काम पूरा नहीं होता है, लोग परेशान हो जाते हैं, आखिर क्यों ऐसा होता है। हम सरकार को सलाह देना चाहते हैं कि भारत ने और कई एक राज्यों ने प्रिस्मैटिक मॉडल छोड़ दिया है, प्रिस्मैटिक मॉडल क्या होता है कि जहां 15 डिपार्टमेंट को जोड़ लिए एक योजना को पूरा करने में, अब बताइये, इनकी जो योजना है सात निश्चय इसमें कितने डिपार्टमेंट लगे हैं इकट्ठे, जल-जीवन-हरियाली में कितने डिपार्टमेंट लगे हैं, कृषि रोड में कितने लगे हैं, किसी पर जवाबदेही है, किसी पर जिम्मेदारी है, सब उसको दोषी ठहराता है, उसको दोषी ठहराता है यही काम चल रहा है। केवल जो है टैक्स कलेक्शन हो रहा है, टैक्स कलेक्शन हो रहा है आर.सी.पी....(व्यवधान)

अब हम तो नहीं कहते हैं कि 15 दिनों में 100 करोड़ रुपये मेरी पार्टी में आ गया। 15 दिन में 100 करोड़ रुपया कहां जा रहा है, वह तो हम तय नहीं करते हैं। अच्छा चलिए, बैठिए न।(व्यवधान)

महोदय, प्रिस्मैटिक मॉडल जिसको हमने सदन में समझाया कि प्रिस्मैटिक मॉडल जहां बहुत लोग को ले गया, एक को नॉडल डिपार्टमेंट बना दिया, वो पल्ला झाड़ रहा है, वो पल्ला झाड़ रहा है। अब पूरे देश में और कई राज्यों में डिफेक्टेड मॉडल आफ डेवलपमेंट चल रहा है। डिफेक्टेड मॉडल आफ डेवलपमेंट जहां एक-दो विभाग को जिम्मेवारी होगी, उनको ही काम पूरा करना है, उनकी ही जिम्मेदारी तय होगी, उनकी ही जवाबदेही होगी, तब काम होता है। जब पूरे देश ने, कई राज्यों ने छोड़ दिया है तो आप जो है प्रिस्मैटिक, उसके तहत जो है क्यों काम कर रहे हैं, तो यह छोड़ देना चाहिए। इसी वजह से महोदय पारदर्शिता नहीं होती है, कहीं पारदर्शिता नहीं होती है। लोगों को कन्फ्यूजन होता है, विधायक लोग सवाल पूछते हैं तो बोलते हैं उधर ट्रांसफर हो गया, उधर ट्रांसफर हो गया। होता है कि नहीं होता है। लोगों को दिक्कत होती है, तो महोदय यह सारी चीज जो है 80-80 घोटाले ऐसे थोड़े ही हुए हैं जो छुपा हुआ है। इसलिए यह जानना जरूरी है इसलिए मेरी सलाह है कि यहां डिप्रफेक्टेड मॉडल आफ डेवलपमेंट को अपनाना चाहिए। (व्यवधान)

अच्छा सुनिये-

"यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां,
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा होगा"

महोदय, ये इनका प्रिस्मैटिक मॉडल जो है इसको छोड़ देना चाहिए और हमने कहा डिफेक्टेड मॉडल आफ डेवलपमेंट, इसको अपनाने की जरूरत है। अब बात करेंगे हम एजुकेशन की, तो कल मुख्यमंत्री जी जवाब दे रहे थे, अरे, हमको तो पता ही नहीं कि बिहार के इतने लोग यूक्रेन में हैं। बताइए ताज्जुब है, इसके लिये कुछ करना चाहिए। कितने साल हो गये अब तो अंतिम पड़ाव पर हैं।

यह हम अपनी बात नहीं, जो जनता कह रही है वही कह रहे हैं। जो जनता कह रही है, वही हम कह रहे हैं। महोदय, बिहार चुनाव में तो मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि यह मेरी अंतिम रैली है। हमने नहीं कहा। (हस्तक्षेप)

ठीक है। महोदय, जवाब दें, मजबूती के साथ दें हमको अच्छा लगेगा। ...महोदय, तो कल आप भी थे ही, तो आपने सुना होगा कि भाई इतना लोग बिहार के बाहर पढ़ने जा रहा है एक और देश बताया, वहां भी लोग पढ़ने जा रहा है। अब आप बताइए, जाए क्यों नहीं। बिहार से बाहर जाए क्यों न और सरकारी स्कूल में क्यों पढ़ें? कितना सरकारी स्कूल मं लोग पढ़ रहा है सब तो प्राइवेट ही ज्यादातर जा रहा है। क्यों ? अब बताते हैं। ....महोदय, यह सदन केवल सच बोलने के लिए होना चाहिए, जनता की मुसीबतों को दूर करने के लिए होना चाहिए, न कि टी.टी.एम. करने के लिए होना चाहिए। अब कुछ लोग ताबड़तोड़ तेल मालिश करते रहें तो हम क्या कर सकते हैं, जनता आकलन करेगी।

महोदय, अब आंकड़े देखिये बिहार में 18 से 23 वर्ष में लगभग 1 .25 करोड़ युवा हैं यानी सबसे ज्यादा भारत में युवा हैं जिसमें से बिहार में मात्रा 1 लाख, 78 हजार, 831 स्टूडेंट ही

इनरोल्ड हैं, इसका मतलब यह है कि 1 करोड़, 23 लाख, 21 हजार, 167 युवा उच्च शिक्षा से दूर हैं यानी 1 करोड़, 23 लाख से भी ज्यादा लोग शिक्षा से दूर हैं या फिर अन्य प्रदेशों में पढ़ाई करने जाते हैं यह सच्चाई है। ब्रेन-ड्रेन के साथ-साथ मनी भी ड्रेन होता है यानी खर्चा भी बाहर हो रहा है, बिहार का पैसा बाहर जा रहा है वहां खर्च हो रहा है। ब्रेन-ड्रेन, मनी ड्रेन सब हो रहा है वहां, पढ़ाई भी वहीं, बाहर लोग बस भी जा रहे हैं तो यह स्थिति पैदा हुई। अब क्यों? क्योंकि स्कूल में छात्र ड्रॉप आउट रेट देश में सबसे ज्यादा बिहार में है। गुणवत्ता शिक्षा में टॉप 20 में से बिहार 19वें नंबर पर है अब बताइए। एक भी ग्रेजुएशन समय पर पूरी होती है किसी छात्र का? समय पर कोर्स चलता है, किसी का? नहीं चलता है। कॉलेज की क्या व्यवस्था है कि हमारा स्तर उस लायक है कोई क्वालिटी आफ एजुकेशन मिल रहा है अब तो टीचर को बोला जा रहा है जाइए दारू वाले को पकड़ के लाइए। अपने गलती कर रहे हैं और अपने अफसोस जता रहे हैं और कर कुछ नहीं रहे हैं। अच्छा लगा कि आज पता चला कि बाहर जा रहा है, उनको तो यह भी बता दें आपके माध्यम से महोदय कि बिहार का हर दूसरा परिवार पलायन कर रहा है। पढ़ाई, शिक्षा, स्वास्थ्य को लेकर, रोजगार के लिए, क्या हालत बनी हुई है, क्या बिहार चला रहे हैं हमने कुछ गलत नहीं कहा कि भाई आप थके हुए हैं, अब उब चुके हैं, अब उबे भी क्यों न?

बिहार में सबसे ज्यादा 70 परसेंट बच्चों का पहली से दसवीं कक्षा के बीच ड्रॉप आउट रेट है। पहली से दसवीं का 70 परसेंट ड्रॉप आउट रेट है महोदय, ए.एस.ई.आर. रिपोर्ट वर्ष 2017-18 देखें तो पता चलता है कि बिहार में 90 फीसदी स्कूल में कम्प्यूटर लैब है ही नहीं। अब 90 फीसदी स्कूलों में कंप्यूटर लैब नहीं है। 30 फीसदी में लाइब्रेरी नहीं है। 60 फीसदी स्कूलों में प्लेग्राउंड नहीं है। 45 फीसदी स्कूल में बाउंड्री वॉल नहीं है। बिहार के स्कूलों में लगभग साढ़े तीन लाख शिक्षक के पद खाली हैं और हमने आपको बताया सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कि कितनी शिक्षा विभाग में बचत है, पैसा बचा हुआ है तो क्यों नहीं आप पद देते हैं, समय पर सैलरी देते हैं, समय पर पेंशन देते हैं यह तो बताना चाहिए? राष्ट्रीय औसत के मुताबिक टीचर स्टूडेंट रेश्यो 1.27 है, वहीं बिहार में सबसे ज्यादा 1.55 है, एक पचपन, समझ जाइए महोदय यह सारी बात। उर्दू शिक्षकों और मदरसों की हालत सामान्य स्कूलों की तुलना में बहुत खराब है महोदय। क्राई, क्राई मतलब चाईल्ड राइट्स एंड यू रिपोर्ट और सेंटर फोर बजट एंड गवर्ननेंस अकाउंटबिलिटी, सी.बी.जे.ए. से पता चलता है कि भारत में अन्य राज्यों की तुलना में स्कूली शिक्षा पर, पर-कैपिटा खर्च बिहार में सबसे ज्यादा कम है, अब कोई परीक्षा होती है तो पेपर लीक कर जाता है, कोई एक एग्जाम बता दीजिए, कोई एक परीक्षा बता दीजिए जिसमें पेपर लीक न हुआ हो? कांट्रैक्चुअल टीचर्स हैं, पैसा है विभाग में तो आप परमानेंट नौकरी क्यों नहीं देते हैं भाई। आप कांट्रैक्ट पर टीचर क्यों रखे हुए हैं अगर आप बजट खर्च नहीं कर पा रहे हैं। साल में तो ग्रेजुएशन होता है सब को पता है मतलब नये किरदार आते जा रहे हैं मगर नाटक वही पुराना चल रहा है यह सच्चाई है महोदय। आप देखिए, फेल्योर है इनका बिहार स्टार्ट अप की नीति अंतर्गत युवाओं में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए 5 सौ करोड़ के वेंचर कैपिटल का प्रावधन किया गया है जो स्टार्ट अप योजना है उसके लिए 5 सौ करोड़ के लिए वेंचर कैपिटल खड़ा किया गया है वहीं 2018 में अगर देखा जाए तो इतना जटिल प्रक्रिया है इसका कि 5 हजार आवेदन में से मात्र 60 को ही मिला स्टार्ट अप योजना, कैसे आप चला पाइएगा? एक रिपोर्ट के अनुसार देश में किसानों की सबसे कम आय है, हम पेपर का कटिंग भी आपको पढ़ के बता रहे हैं, जांच एजेंसियां बता रही हैं औसत हर भारतीय किसान परिवार, आप किसानों का औसत देखिये

बिहार में सबसे ज्यादा 70 परसेंट बच्चों का पहली से दसवीं कक्षा के बीच ड्रॉप आउट रेट है। महोदय, ए.एस.ई.आर. रिपोर्ट वर्ष 2017-18 देखें तो पता चलता है कि बिहार में 90 फीसदी स्कूल में कम्प्यूटर लैब है ही नहीं। 30 फीसदी में लाइब्रेरी नहीं है। 60 फीसदी स्कूलों में प्लेग्राउंड नहीं है। 45 फीसदी स्कूल में बाउंड्री वॉल नहीं है। बिहार के स्कूलों में लगभग साढ़े तीन लाख शिक्षक के पद खाली हैं और हमने आपको बताया सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कि कितनी शिक्षा विभाग में बचत है, पैसा बचा हुआ है तो क्यों नहीं आप पद देते हैं, समय पर सैलरी देते हैं, समय पर पेंशन देते हैं यह तो बताना चाहिए?

आय का, भारतीय किसान परिवार 77,124 रुपये सलान कमाता है वहीं बिहार में यह आय देश में सबसे कम है महज 42 हजार रुपये यानी मात्रा 6,223 रुपया प्रति माह किसान का परिवार कमा रहा है आप बताइए ? महंगाई इतनी ज्यादा हो गई है। (व्यवधान)

महोदय, किसानों की आय को तो छोड़िये महोदय, खाद नहीं मिल रहा है, यूरिया नहीं मिल रहा है इतना महंगा हो चुका है, किसान तबाह हो रहा है क्या सरकार कर रही है महोदय। नीति आयोग मे एम.पी.आई., मल्टी डायमेंशनल पावर्टी इंडेक्स, बहुआयामी गरीबी सूचकांक समझ लीजिये, सुन लीजिये। बहुआयामी गरीबी सूचकांक में बिहार देश के सबसे गरीब राज्य में है। बिहार में 52 फीसदी आबादी गरीब है, गरीबी न्यूट्रिशन, मैटरनल हेल्थ, स्कूल अटेंडेंस इत्यादि मानकों में बिहार सबसे नीचे हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार बिहार के 38 में से 22जिलों में 50 फीसदी से भी कम गरीब लोग हैं और 11 जिलों में तो 61 फीसदी से भी ज्यादा गरीब लोग हैं। प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार 10 साल से कम उम्र के बच्चों में साक्षरता स्तर को बताने वाले फांउडेशनल लिटरेसी एंड

न्यूमेरेसी इंडेक्स में बिहार सबसे नीचे है साक्षरता वाले में, जो उम्र है महोदय, उसके अनुसार 10 साल से कम उम्र के बच्चों में सबसे बिहार का कम है। महिलाओं का शोषण और कुपोषण बिहार में चरम पर है। आप इस बात से सहमत होंगे। यह हमारा नहीं, सारे आयोगों और एजेंसियों की रिपोर्ट है। महिलाओं की बात करते हैं लेकिन महिलाओं का शोषण ओर कुपोषण में बिहार चरम पर है क्या कहना है इस पर? नेशनल रूरल हेल्थ मिशन रिपोर्ट के अनुसार हम बता भी रहे हैं कि कौन एजेंसियां कर रही हैं नेशनल रूरल हेल्थ मिशन रिपोर्ट के अनुसार 70 फीसदी महिलाएं 15 से

प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार 10 साल से कम उम्र के बच्चों में साक्षरता स्तर को बताने वाले फांउडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी इंडेक्स में बिहार सबसे नीचे है साक्षरता वाले में, जो उम्र है महोदय, उसके अनुसार 10 साल से कम उम्र के बच्चों में सबसे बिहार का कम है। महिलाओं का शोषण और कुपोषण बिहार में चरम पर है। आप इस बात से सहमत होंगे। यह हमारा नहीं, सारे आयोगों और एजेंसियों की रिपोर्ट है।

49 वर्ष के ग्रुप में कुपोषित हैं, बताइए क्या स्थिति है। ....देश में सबसे अधिक महंगी बिजली है। देश में सबसे अधिक बिहार में महंगी बिजली है और मात्रा 350 किलो वाट परकैपिटा बिजली खपत है जो भारत में सबसे कम है, सबसे कम, यहां तक कि नागालैंड 356 कि.वा., मणिपुर 371 कि.वा. और त्रिपुरा 514 कि.वा. बिजली परकैपिटा कन्जम्सन है। महोदय, बिहार सबसे कम है, बताईए मणिपुर ये सब राज्य जो है पूर्वी क्षेत्र के वह भी आगे है, आपका कन्जम्प्सन इतना कम है क्यों? ठीक इसी प्रकार हर घर नल योजना जो है वह कुव्यवस्था और भ्रष्टाचार के भेंट चढ़ गया है। हम तो सुने कि एक सांसद महोदय, कौन कौन क्या क्या बोलता रहता है, भाई पार्लियामेंट में यानि देश के सबसे बड़े पंचायत में कहा कि 90 फीसदी नल से पहुंच रहा है जल, ये मजाक, क्या कर रहे हैं भाई, 90 फीसदी पहुंच रहा है, जरा कलेजा पर हाथ रखकर बोलिये तो, ईश्वर की शपथ खाइए तो, भगवान की कसम खाइए तो कि 90 प्रतिशत नल का जल आपके क्षेत्र में पहुंच रहा है, खड़े होकर बताइएगा, कलेजा पर हाथ रखकर बतलाइए, कोई नहीं कसम खा सकता है कि 90 फीसदी नल से जल मिला है ,यह केवल भ्रष्टाचार में फ्लॉप हो गयी योजना, कहीं कुछ है, कहीं कुछ है तो इसलिए महोदय जो सच्चाई है उसको बोलना चाहिए। केवल गुलाबी किताब में कुछ लिख देने से थोड़े ही हो जाता है।

अरे, आंखों में आपलोग चश्मा लगाइए, जाकर के जमीनी स्तर पर देखिये कि क्या स्थिति बनी हुई है। महोदय, भूमिहीन जो दलित, महादलित हैं, सरकार ने वादा किया था कि उनको सरकार तीन डीसमिल जमीन देगी लेकिन वह भी एक छलावा साबित हुआ, इससे मांझी जी इनकार नहीं कर सकते हैं। बोलिये, सरकार ने बोला था कि नहीं बोला था कि तीन डीसमिल जमीन महादलित को देगी, ये छलावा है कि नहीं है? मांझी जी सरकार के सहयोगी है लेकिन हमको अच्छा लगता है कि ये सच बोलते हैं, गरीबों के पक्ष में कभी कभी बोलते हैं। ये बताएंगे तो महोदय, जिसके किरदार पे शैतान भी शर्मिन्दा है वो भी आयें हैं, यहां करने नसीहत हमको।

महोदय, अब हेल्थ की भी बात करें तो..महोदय, आजकल देखा जाता है कि कई घोटाले होते हैं लेकिन बड़े बड़े अधिकारियों पर कोई कार्रवाई नहीं होती है, बल्कि उसको रिटायर कर दिया जाता है और रिटायर करने के बाद फिर कहीं न कहीं उनको सलाहकार के रूप में, बड़े-बड़े अधिकारियों को एक्सटेंशन दिया जाता है, आखिर क्यों? क्यों एक्सटेंशन दिया जाता है भाई, क्या बात है, तो महोदय ये नई परम्परा बनती जा रही है, इस पर मुख्यमंत्री जी को, उपमुख्यमंत्री जी लोगों को जवाब देना चाहिए। महोदय, हेल्थ पर भी बात करें तो नीति आयोग ने हेल्थ मानकों में भी बिहार को फिसड्डी राज्य माना है। आपका आदेश होगा, 9 मिनट बोलना है तो यह डेटा जो है, हम चाहेंगे हेल्थ का नीति आयोग का जो रिपोर्ट है इसको इन्क्लूड कर लिया जाए, इसको पढ़ा हुआ माना जाए ।

अनइम्प्लायमेंट में मुख्यमंत्री जी आप बताइए, अपने भाषण में आपको नहीं लगा कि बेरोजगारी पर बोलना चाहिए। देश सबसे युवा देश है, उसमें सबसे युवा बिहार है और देश में बिहार का जो आपको डाटा गिनाये, यहां कितनी ज्यादा बेरोजगारी है, कितने ग्रेजुएट बेरोजगार हैं लेकिन फिर भी आप लोग जो है रोजगार सृजन नहीं कर पा रहे हैं, नौकरी नहीं दे पा रहे हैं। हम तो कहे थे आकलन करके, रिपोर्ट देखकर कि पैसा भी है, सबकुछ है, तब हमने कहा था कि 10 लाख रोजगार देंगे, अगर सरकार बनी तो सरकारी नौकरी देंगे, ये हमने बोला था और मुख्यमंत्री जी बोलते हैं असंभव, यह कोई नहीं कर सकता, तब बी.जे.पी. के लोगों ने कहा, वित्त मंत्री यहां आयीं भारत की और उन्होंने कहा कि हम जो है 19 लाख रोजगार की व्यवस्था करवा देंगे, वह भी सरकारी नहीं, वे भी तो जान ही रहे हैं, काम तो है ही लेकिन भई कहां है 19 लाख, क्या रोड मैप है, क्या विजन है, लोग आते हैं, मेरिट वाले लोगों की परीक्षा होती है लेकिन उसको नहीं दाखिला मिलता है और सन्नी लियोनी पास कर जाती है, साउथ की जो रूपमा है वह पास कर जाती है कई कई एक्जाम में, पता नहीं कैसे आपकी एजेंसी सब काम कर रही है। भाई, 2013 वाला अभी तक लटका हुआ है, एस.टी.ई.टी. वाला हो या अन्य कोई परीक्षा हो, हर विभाग में लोग परेशान हो चुके हैं लेकिन रोजगार नहीं मिल रहा है। सारी व्यवस्था है, विभाग का पैसा आप खर्च नहीं कर पाते हैं। हम आपको बतलायें, बिहार

में अद्भुत है जो जितना शिक्षित है वह उतना ही बेरोजगार है। जो जितना शिक्षित, वह उतना ही बेकार। ग्रेजुएट ऐंड एवभधारी ग्रेजुएट जो है, या उससे उपर डिग्री लिये हुए हैं 26 फीसदी और डिप्लोमा सर्टिफिकेट होल्डर जो हैं 20 फीसदी लोग बेरोजगार हैं। अब आप बतलाइए, बिहार में चार में से तीन युवा बेरोजगार है, युवाओं को काम नहीं मिल रहा है जिससे यहां एक भयावह स्थिति पैदा होती जा रही है। विकास तभी संभव है जब रोजगार सृजन की दूरगामी नीति अपनायी गयी हो।

बजट में बताइए, क्या दूरगामी नीति है भाई ,कोई नीति नहीं, कोई विजन नहीं है, कोई नयापन नहीं, कोई नया ब्लू प्रिंट नहीं, वहीं मजदूरी का योगदान जी.डी.पी. में देखें तो पाते हैं कि लगभग 18 फीसदी कृषि का, 18 प्रतिशत उद्योग का और 64 फीसदी योगदान सेवा क्षेत्र का, यह साबित करता है कि बिहार में विभिन्न श्रमिक योगदान और मजदूर के क्षेत्र में भारी अंतर है लेबर फोर्स पार्टिसिपेशन, हमने पहले भी बताया महोदय कि 4.3 है बिहार में, महिलाओं के जॉब मार्केट में जो कि भारत के सबसे कम पार्टिशिपेशन में है। इंडस्ट्री, आई.टी. सेक्टर, फूड प्रोसेसिंग यूनिट, सुगर मिल सब बंद, कुछ नहीं चालू है, सब चैपट, इसका कहीं जिक्र नहीं है। इंडस्ट्रीज का जिक्र नहीं किया, आई.टी.पार्क का जिक्र नहीं किया, फुड प्रोसेसिंग यूनिट का जिक्र नहीं किया, केला, मखाना, मक्का, कितना ज्यादा होता है, क्यों नहीं आप यहां फुड प्रोसेसिंग यूनिट लगाते हैं, क्यों नहीं बंद पड़े हुई चीनी मिल खोलते हैं, क्यों नहीं इंडस्ट्रीज लगाते हैं, क्यों नहीं आई.टी. पार्क लगाते हैं, सेज लगाते है, क्यों नहीं लगाते हैं, क्या कर रहे हैं भाई, डिजीटल जमाने में रह रहे हैं और प्रधानमंत्री जी खाली कहते हैं कि मिक्सिंग कीजिये, विडियो बनाइए, मिक्सिंग कीजिये। अच्छी बात है, उनकी बात होगी, वह अपना समझे होंगे लेकिन बिहार में तो ये होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए... अब बताइए, सबसे ज्यादा मैन पावर हमारे पास है लेकिन उसका उपयोग ही नहीं करता है। कोई इनकार इससे कर सकता है कि कितना लोग मजदूरी के लिए बाहर जाता है कि नहीं जाता है, विदेश तक जाता है लेकिन हमारे यहां कोई उपयोग उसका है ही नहीं, क्यों नहीं है भाई, अब जब कोरोना काल में लोग फंसा था तो क्या स्थिति बन गयी थी परिवार पर, पैदल चलकर आये लोग, भूखे रहे, कितने लोग मर गये, क्या स्थिति बनी हुई थी तो महोदय, पलायन हो रहा है, हर दूसरे घर के लोग काम के लिए दूसरे प्रदेश में जा रहे हैं और ये डबल इंजन की सरकार ने कमाल कर दिया, गरीबों को गरीब और अमीरों को मालामाल कर दिया और ये स्थिति है महोदय। अब महंगाई पर भी हमलोगों को बोलना था, इस पर हम एक पक्ष रखना चाहेंगे। 45 वर्षों बाद महंगाई शरीर को तोड़ रही है। तेल, डीजल, पेट्रौल, किराया, मसाला, फल, सब्जी सभी चीज पर टैक्स लगा दिया गया, गरीब मर रहा है तो इस पर एक शायरी -

"आपके हाकिम की फकीरी पे तरस आता है,
जो गरीबों से पसीनों की कमाई मांगे।"

महोदय, किसान बदहाल हैं। कर्मचारी और मध्यम वर्ग को जो पेंशन है...वह नहीं है। हमारी मांग है पूरे विपक्ष की, मजबूती के साथ हम सदन में रखना चाहते हैं कि पुरानी पेंशन को लागू होना चाहिए। ये हमारे घोषणा पत्र में भी था कि पुराने पेंशन को लागू करना चाहिए, सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाकर 1000 रुपया करना चाहिए यह हमलोगों की मांग है।

(नेता प्रतिपक्ष का बिहार विधानसभा में 4 मार्च, 2022 को दिये गए भाषण का संपादित अंश।) ■

श्रद्धांजलि

नंद किशोर राम : एक सच्चे प्रतिबद्ध समाजवादी

विगत 13 अप्रैल को 82 वर्षीय समाजवादी साथी नंद किशोर राम जी ने पटना के एक अस्पताल में अंतिम सांस ली। नंद किशोर राम उन बहुजन नेताओं में थे जिन्होंने समाजवाद के परचम को पुराने शाहाबाद की धरती पर मजबूत किया और कड़े राजनीतिक संघर्ष के बाद संसदीय राजनीति में अपनी जगह बनाई। उनके प्रेरणा स्रोत कोई और नहीं स्वयं कर्पूरी जी थे। उन्होंने आज के अनेक बहुजन नेताओं की तरह राजनीति को व्यक्तिगत मुक्ति का साधन न मानकर उसे व्यापक आबादी के जीवन में समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व स्थापित करने का माध्यम माना था। उनका पूरा जीवन इसी लक्ष्य को समर्पित रहा। एक प्रतिबद्ध आंबेडकरवादी की तरह अपने संसदीय और नागरिक जीवन में उन्होंने सदैव आम आदमी के हितों की लड़ाई लड़ी।

उन्होंने जिस दौर में राजनीति का दामन थामा वह गैर कांग्रेसवाद का दौर था। बिहार के वंचित-दलित सामाजिक समूह कांग्रेसी राज में उपेक्षा की शिकार थीं। नंद किशोर जी ने समाजवादी राजनीति के तहत इसका प्रतिकार किया। वे बिहार विधान परिषद के मनोनीत सदस्य रहे। इस अवधि में बिहार विधान परिषद् में उन्होंने एस.सी.एस.टी. वेल्फेयर कमिटी के सभापति के रूप में दलित समाज की बहुमुखी समस्याओं को अपने तरीके से हल किया। शिक्षा और समाज सुधार में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। संप्रति वे राजद के प्रदेश उपाध्यक्ष थे।

राजद परिवार अपने इस समर्पित नेता के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने एक समाजवादी कार्यकर्त्ता के रूप में राजनीतिक जीवन आरंभ किया था। ठेठ ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले चन्द्रशेखर ने आत्मकथा लिखी है, जो हर राजनीतिक कार्यकर्त्ता को पढ़नी चाहिए। हम उसी का एक अंश यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। - संपादक

चन्द्रशेखर की कहानी : उन्हीं की जुबानी

1951 में अनायास एक घटना घटी। जून के महीने में सोशलिस्ट पार्टी की ओर से दिल्ली में जनवादी दिवस मनाया जा रहा था। उसमें जाने के लिए मैं इलाहाबाद स्टेशन पर आया। दिल्ली के लिए टिकट ले रखा था। प्लेटफार्म पर बाबू गेंदा सिंह मिले। वे उस समय उत्तर प्रदेश सोशलिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी थे। वे बहुत दुखी दिख रहे थे। मैंने पूछा, गेंदा बाबू, इतने दुखी क्यों हैं? उन्होंने कहा कि जयप्रकाश जी का कार्यक्रम तय करने आया था। यहाँ के जितने नेता हैं उनमें से कोई तैयार नहीं है। उनका कहना है कि जून के महीने में बड़ी गर्मी है। जेपी की सभा आयोजित करना सम्भव नहीं होगा। उस समय सोशलिस्ट पार्टी में कई नेता थे, लेकिन सब वकील थे। मैंने सोचा कि क्या किया जाए? कुछ देर बाद उन्होंने पूछा कि क्या आप इस कार्यक्रम को नहीं कर सकते? मैंने कहा कि अगर विश्वविद्यालय खुला होता तो मेरे लिए सम्भव हो सकता था। विश्वविद्यालय फिलहाल बन्द है। विश्वविद्यालय से बाहर अन्य लोगों से मेरा सम्पर्क बहुत कम है। वकील लोगों के सहयोग पर मुझे भरोसा नहीं। सम्पर्क में जो एक-दो लोग हैं, उनका प्रभाव इतना नहीं है। यह कहने के बाद मैंने इस बारे में थोड़ी देर सोचा। फिर गेंदा बाबू से बोला : अच्छा, ठीक है। अगर आप यह चाहते हैं कि जेपी की सभा होनी ही है तो मैं प्रयास करूंगा। मैंने रेलवे का जो टिकट लिया था, उसे वापस किया और फिर जेपी के कार्यक्रम को संगठित करने के काम में जुट गया। मेरे साथ रामेश्वर बाली थे। वे पश्चिमोत्तर प्रदेश से आए थे। शरणार्थी थे, पर थे बड़े उत्साही और कर्मठ। समाजवादी आंदोलन में काम करते थे। दूसरे बलिया के मेरे मित्र काशीनाथ मिश्र थे। दोनों साथ थे। हम लोगों ने काम शुरू किया। उस जमाने में जयप्रकाश जी विभिन्न राष्ट्रीय श्रमिक संस्थानों में काम करनेवाले मजदूरों के संगठन के अध्यक्ष थे। वे रेलवे मैन्स फेडरेशन के चेयरमैन थे। पोस्टल यूनियन के अध्यक्ष थे। आर्डीनेन्स फैक्टरी कार्यकर्ता के संघ के भी अध्यक्ष थे। हम लोगों ने इन संगठनों से सम्पर्क किया। उन्होंने अपने यहाँ जेपी की सभा आयोजित की। उन लोगों ने बहुत सहयोग किया। एक बड़ी सार्वजनिक सभा करने के लिए हम सबने धन इकट्ठा करना शुरू किया। शहर में हमें ज्यादा लोग जानते भी नहीं थे। लेकिन छोटे दुकानदारों और साधारण लोगों से हमने सहयोग लिया। हर छोटी-बड़ी दुकान से चार आना, आठ आना या एक रुपया मिला। मुझे याद है कि मीटिंग आयोजित कराने में जो खर्चा हुआ, उसके बाद हम लोगों ने एक हजार एक रुपए की थैली जयप्रकाश जी को दी थी। जेपी की पाँच या छह सभाएँ हुईं।

शाम को जेपी जब विश्राम के लिए रेलवे अतिथि गृह में ठहरे तो उन्होंने किसी से पूछा, चंद्रशेखर कौन हैं? उनका नाम हर जगह सुनता हूँ लेकिन मुलाकात नहीं हुई। लोगों के बताया कि वे तो बलिया के ही रहने वाले हैं। मुझे बुलाया गया और मैं उनसे मिलने गया। उससे पहले स्टेशन पर उनका स्वागत करने की बात आई। उसी समय किसी ट्रेन से डी.एफ.कराका भी आ रहे थे। उन्हें जयप्रकाश जी की इस यात्रा की रिपोर्टिंग 'करेण्ट' साप्ताहिक में करनी थी। लेकिन सभी जयप्रकाश जी के स्वागत के लिए जाना चाहते थे। कोई डी.एफ.कराका को लेने जाने के लिए तैयार नहीं था। तब मैं अकेले डी.एफ. कराका को लेने के लिए सोशलिस्ट पार्टी का झण्डा लेकर प्लेटफार्म पर गया। मुझे याद है कराका ने बाद में 'करेण्ट' में लिखा कि : 'आई गॉट वन मैन रिसेप्शन विद ए रैड फ्लैग ऑन दी रेलवे प्लेटफार्म।' जून 1951 में जयप्रकाश जी से वहीं मेरी पहली मुलाकात हुई। उसके पहले उनकी सभाओं में मैं जरूर गया था, लेकिन कभी उनसे मुलाकात नहीं हुई। सोशलिस्ट नेताओं के साथ मैं एक कार्यकर्ता की हैसियत से जाता रहा। 1948 के नासिक सम्मेलन में भी सम्मिलित हुआ था। जब पार्टी कांग्रेस से अलग हुई थी, उस समय सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन में जाने के लिए पार्टी का सदस्य होना आवश्यक था। सदस्यता मिलना सुगम नहीं था पर राजनारायण जी ने मेरे लिए किसी के नाम पर कार्ड का प्रबंध कर दिया। जेपी से पहली मुलाकात में सिर्फ औपचारिक बातें हुईं।

1942 में हजारीबाग जेल से भागने तथा भूमिगत आंदोलन चलाने के कारण जेपी बहुत प्रसिद्ध हो गए थे। उनका स्वभाव ही ऐसा था कि उनसे प्रभावित हुए बिना कोई रह नहीं सकता था। हर व्यक्ति के साथ वे स्नेह और समानता का व्यवहार करते थे। भोजपुरी क्षेत्र के हर व्यक्ति से वे भोजपुरी भाषा में ही बात करते थे। इससे एक प्रकार की आत्मीयता का बोध होता था। जेपी एक मर्यादित व्यक्ति थे। लेकिन यह भी सच है कि उस वक्त जयप्रकाश जी और आचार्य नरेंद्रदेव की तुलना में नई उम्र के लोग डॉ. राममनोहर लोहिया के खुलेपन से ज्यादा प्रभावित होते थे। डॉ. लोहिया का खुलापन उस सीमा तक था जहाँ तक जाने की बात जयप्रकाश जी या आचार्य नरेंद्रदेव सोच भी नहीं सकते थे। डॉ. लोहिया का खुलापन अनेक रूपों में था, जैसे : कॉफी हाउस या रेस्त्रां में युवाओं के साथ बैठना, अगर कहीं डांस भी

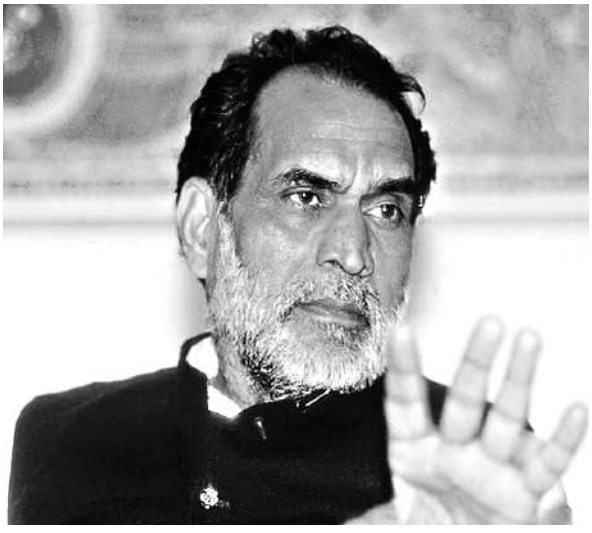

1927 - 2007

हो रहा हो तो लड़कों से कहना कि जाओ, हिस्सा लो। लोहिया के व्यक्तित्व की यह मुक्तशैली थी। जेपी का मर्यादित व्यक्तित्व इससे उलट था। जेपी से दूसरी मुलाकात के बारे में याद नहीं है। असल में जब परिचय हो गया तो लगातार मुलाकातें होती रहीं। उस वक्त कुछ लोग ऐसे थे जो नेताओं के पीछे-पीछे दौड़ते थे। मेरे लिए यह संभव नहीं था। मैं बहुत संकोच करता था। उन दिनों मैं सोच भी नहीं सकता था कि जयप्रकाश जी जिस मंच से भाषण दे रहे हैं, मैं उस पर जाकर बैठूं।

मैं भोजपुरी भाषा बोलनेवाले के प्रति स्वाभाविक रूप से सामीप्य महसूस करता था। जेपी मुझसे अक्सर भोजपुरी में ही बात करते थे इसलिए उनसे आत्मीयता एक सहज परिणति थी। एक बार जयप्रकाश जी मेरे गाँव में गए। तब वे आधे सर्वोदयी थे और आधे सोशलिस्ट। उनकी एक अपील थी कि जितने समाजवादी कार्यकर्ता हैं, वे अपने-अपने गाँव में कोई रचनात्मक काम करें। मैं अपने गाँव में गया और सोचा कि क्या करूँ? फिर मैंने एक अस्पताल बनवाने का निर्णय लिया। मेरे यहाँ उसकी बहुत जरूरत थी। व्यक्तिगत रूप से मैं स्वयं भी आहत था, क्योंकि मेरी माँ बिना दवा के मर गई थी। मै स्वयं बचपन में उपचार के अभाव को झेल चुका था इसलिए मैंने तय किया कि अस्पताल ही बनाना चाहिए। मेरे गाँव के पास के गाँव सिउरी में कुछ जमीन थी। लोग कहते थे, वहाँ भूत रहते हैं। मैंने गाँववालों से कहा कि हम यहाँ अस्पताल बनवाना चाहते हैं। गाँववालों ने जवाब दिया कि काम कौन करेगा? इस पर मैंने और मेरे चचेरे भाई अनिरुद्ध सिंह ने फावड़ा चलाना प्रारंभ किया। दो-चार दिन में जितना खोद सके, हमने मेहनत की। हमारी जिद और लगन को देखकर अनेक मजदूर वहाँ पहुँच गए। हमने मिलकर अस्पताल की जमीन तैयार कर दी। इसके बाद जयप्रकाश जी आए और अस्पताल का शिलान्यास किया। उन्हें गाँव ले जाने के लिए हम लोगों ने पाँच-छः किलोमीटर का रास्ता गाँव के खेतों की मेड़ काट-काटकर तैयार किया। उसे जीप के जाने लायक बनाया। जीप के अलावा और कोई दूसरी गाड़ी नहीं जा सकती थी। उन दिनों डॉक्टर की सलाह पर जयप्रकाश जी अन्न नहीं खाते थे। मीट, मछली और मुर्गा आदि ही उस समय उनका प्रमुख भोजन था। रात में जयप्रकाश जी हमारे गाँव के प्राइमरी स्कूल में ठहरे। अपने यहाँ की सभा के बाद अगले दिन हम लोग जयप्रकाश जी के गाँव के लिए चले। रास्ते में एक मजेदार घटना घटी। आगे एक जीप में जयप्रकाश जी और एक-दो लोग थे। दूसरी जीप में पीछे मैं और कुछ अन्य साथी थे। जयप्रकाश जी के गाँव जाने का रास्ता खेतों के बीच से जाता था। कच्चे रास्ते के बीच एक नाला पड़ता था, उसमें थोड़ा पानी था। लेकिन जयप्रकाश जी के गाँव की जमीन बालूदार थी। वहाँ बरसात के पानी में गाड़ी धंसती नहीं थी। उनकी जीप आगे निकल गई लेकिन हम लोगों की जीप पीछे फँस गई। मैंने अपनी जीप में बैठे साथियों से मजाक में कहना शुरू किया : 'सभी उतरो, और धक्का दो।' सब लोग उतर रहे थे। मैं अपनी जगह पर बैठा जीप से ही लोगों को ललकार रहा था। थोड़ी देर में मैंने देखा कि जयप्रकाश जी अपनी जीप से उतरकर नीचे आ गए हैं। उन्होंने अपनी चप्पल हाथ में ले रखी हैं और पानी में चलकर हमारी तरफ आने वाले हैं, ताकि मेरी जीप को धक्का दे सकें। मुझे आश्चर्य हुआ और मैं जीप से उतरने लगा। तब तक जीप स्टार्ट हो गई और हम सब आगे चल पड़े।

जयप्रकाश जी के साथ प्रभावती जी भी थीं। जयप्रकाश जी के गाँव में पश्चिम की तरफ से एक रास्ता जाता था। उस वक्त रात हो गई थी। अंधेरा था, रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। जयप्रकाश जी का घर लालाटोला में था। अँधेरे में ड्राइवर ने किसी मजदूर से पूछा : लालाटोला का रास्ता कौन-सा है? उसने भोजपुरी में कहा कि मैं तो केवल अपने गाँव के पश्चिम में ही घास काटता हूँ। पूरब की तरफ तो कभी गया ही नहीं। इस पर बड़ी हँसी हुई। खैर, रास्ता हमें मिल गया और हम लोग लालाटोला पहुँच गए। अगले दिन हमने सुबह जयप्रकाश जी से रात की घटना बताई। जिस मजदूर से रास्ता पूछा था, उसकी दुनिया कितनी सीमित है, यह बताया। फिर मैंने मजाक के लहजे में कहा कि असल में बड़े पेड़ के नीचे छोटे पौधे अगर उग भी गए तो उनका विकास नहीं होता। आप इस गाँव के बड़े पेड़ हैं...जेपी इस बात पर हँसने लगे। जयप्रकाश जी से शुरुआत में मेरी कोई सैद्धांतिक बातचीत नहीं होती थी। असल में उनसे बातचीत करने की हिम्मत ही नहीं थी। वैसे उनके चेलों से मेरी बहुत बहस होती थी, बल्कि सैद्धांतिक बहस तो डॉ. लोहिया से होती थी। लेकिन कभी जयप्रकाश जी और आचार्य जी से सैद्धांतिक बहस नहीं हुई। लेकिन बाद में जयप्रकाश जी से मैंने बहुत सैद्धांतिक बातें कीं। जब वे भू-दान में गए तो मैंने उनसे विरोध जताया। जब उन्होंने यह कहा कि हम जीवनदान करते हैं तो उसका भी मैंने विरोध किया। दलविहीन लोकतन्त्र के उनके सिद्धांत से मैं कभी सहमत नहीं हुआ। नागालैंड के बारे में उनके विचार पर भी मैंने उनसे बहस की। जयप्रकाश जी के 74 के आंदोलन पर भी मेरी उनसे बहुत चर्चा हुई।

जब मैं रो पड़ा

1951 में विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद मैं सोशलिस्ट पार्टी में पूरा समय देकर काम करने लगा। कुछ ही दिनों में मैं इलाहाबाद...पार्टी का सेक्रेटरी बन गया। गेन्दा सिंह ने मुझे नियुक्त किया था। छः-सात महीने काम करते बीते थे। वे बड़ी कठिनाई के दिन थे। कोई पूछने वाला नहीं। पार्टी में अधिकतर बड़े वकील थे, पैसे वाले थे। पार्टी को ख्याति प्राप्त करने का साधन मानते थे। दिन-रात गरीबों, मजदूरों और किसानों के बीच में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए उनके यहाँ कोई स्थान नहीं था। मैं पुस्तक पढ़कर गरीबी का अनुभव करके इस विश्वास से पार्टी में आया था कि गरीबों को इज्जत की ज़िन्दगी दिलाने में पार्टी अगुआई करेगी, पर वास्तविकता कुछ और दिखाई पड़ी। मन विद्रोह कर उठा और जब 1952 का चुनाव हुआ तो उन चुनावों में हमारी लड़ाई वकीलों से हुई। होलटाइमर वर्कर्स के स्थान पर वकीलों को टिकट दिया जाने लगा। मोतीलाल जी आजादी की लड़ाई में जेल गए थे। बड़े कर्मठ थे। दिन-रात संगठन के काम में लगे रहते थे। उनके टिकट को लेकर वकीलों ने बड़ा विरोध किया। मैंने मोतीलाल जी का समर्थन किया। एक वकील थे सतीश चंद्र खरे। खरे साहब बहुत अच्छे वकील थे। उनका बड़ा योगदान था। 1942 में जब बलिया में कोई वकील स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की वकालत करने नहीं आया तो वे महीनों बलिया जाकर रहे और वहाँ उनकी पैरवी की। मैं उनका आदर करता था। सतीश चंद्र खरे को पार्टी ने टिकट दिया। मुझे यह सन्देह था कि वे अन्त में चुनाव से हट जाएँगे। मैं इस तरह के टिकट बँटवारे के खिलाफ था। अन्त में मेरी बात सही साबित हुई। वे बैठ गए। उस समय सोशलिस्ट पार्टी टिकट देने से पहले हर जिले के लोगों को बुलाया जाता था। उससे पहले पर्यवेक्षक जाते थे। जयप्रकाश जी के बड़े अभिन्न मित्र एमपी सिन्हा बड़े करीने वाले आदमी थे। वे यू.पी. पार्लियामेंट्री बोर्ड के सेक्रेटरी थे। वे इलाहाबाद गए। पार्टी के लोगों की मीटिंग बुलाई गई। मेरी उनसे मोतीलाल के सवाल पर कुछ झड़प हो गई। वकीलों ने तो उनका बड़ा स्वागत-सत्कार किया था, लेकिन मैंने सिन्हा साहब से कहा कि वे कल आए और आज सब निर्णय स्वयं करने लगे। यहाँ हम लोगों ने पार्टी बनाई है। आपने और इन वकीलों ने नहीं बनाई। जब यहाँ पार्टी कुछ नहीं थी तो मैंने इसे बनाया। इसके लिए क्या-क्या किया, यह सिर्फ मैं जानता हूँ। आप चुप रहिए और मेरी जो राय है, वहाँ बता दीजिए। मुझे आगे बात करने की जरूरत नहीं।

मैं उस समय इलाहाबाद नगर पार्टी का सेक्रेटरी था। छोटे-से होटल में मैंने एक कमरा किराए पर लिया था, बहुत सस्ता। उसी में ऑफिस बना रखा था। सोशलिस्ट पार्टी के इलाहाबाद के सेक्रेटरी की हैसियत से मुझे भी राज्य-कार्यालय में बुलाया गया। जब मैं पार्लियामेंट्री बोर्ड के सामने पहुँचा तो एमपी सिन्हा ने मेरा विरोध किया। उन्होंने कहा, इन्होंने मुझे इलाहाबाद पार्टी मीटिंग में बोलने नहीं दिया था। अगर यहाँ इनकी बात सुनी जाएगी तो इससे मेरा अपमान होगा। उनके इस कथन पर मीटिंग में कोई कुछ नहीं बोला। मैं बैठा रहा। उसी मीटिंग में राजाराम शास्त्री और फरीदुल हक अंसारी आदि भी थे। मैं बाहर निकल आया। पान दरीबा लखनऊ में ऑफिस था। वहीं एक बरामदे में पत्थर पर बैठा मैं सोचने लगा यह कौन-सा समाजवाद है? सारे नेता कहते हैं कि विचार से सब लोग समान हैं, लेकिन मुझे बोलने नहीं दिया गया। मुझे बहुत आत्मग्लानि हुई, बुरा लगा। मैं यह सोचने लगा, कि कहाँ फँस गया! फरीदुल हक अंसारी बहुत संवेदनशील व्यक्ति थे। वे आए, उन्होंने पीछे से आकर मेरे दोनों कंधों पर हाथ रखा और कहा, चंद्रशेखर, परेशान मत हो। राजाराम शास्त्री से मैंने कहा है, वे बाद में वे तुमसे राय लेंगे। मेरे धैर्य का बाँध टूट गया। मैं उस जमाने में बहुत गुस्सेवाला था। मैंने अपना गुस्सा रोक रखा था कि नेताओं के सामने क्या

मैं सोचने लगा यह कौन-सा समाजवाद है? सारे नेता कहते हैं कि विचार से सब लोग समान हैं, लेकिन मुझे बोलने नहीं दिया गया। मुझे बहुत आत्मग्लानि हुई, बुरा लगा। मैं यह सोचने लगा, कि कहाँ फँस गया! फरीदुल हक अंसारी बहुत संवेदनशील व्यक्ति थे। वे आए, उन्होंने पीछे से आकर मेरे दोनों कंधों पर हाथ रखा और कहा, चंद्रशेखर, परेशान मत हो। राजाराम शास्त्री से मैंने कहा है, वे बाद में वे तुमसे राय लेंगे। मेरे धैर्य का बाँध टूट गया। मैं उस जमाने में बहुत गुस्सेवाला था। मैंने अपना गुस्सा रोक रखा था कि नेताओं के सामने क्या गुस्सा जाहिर करूँ।

गुस्सा जाहिर करूँ। मुझे जो गुस्सा और ग्लानि थी, उसके कारण मैं जोर-जोर से रोया और नेताओं को जमकर गाली दी। मैं बोलता रहा : ये सब दलाल हैं, बिजनेस करते हैं, इन सबको न पार्टी चलानी है और न समाजवाद से कोई मतलब है। ये यहाँ इसलिए नहीं आये हैं कि उन्हें दल के विकास से कुछ लेना-देना है। फरीदुल साहब ने मुझे ढाढ़स बंधाया और थोड़ी देर में मैं चुप हो गया।

छात्र-जीवन के बाद

विद्यार्थी-जीवन के बाद मैं पार्टी के काम में पूरी तरह लग गया था। इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में उस समय सोशलिस्टों का बहुत जोर था। ज्यादातर लड़के इसके सदस्य थे। जितने भी अच्छे लड़के थे, उसमें से 70 प्रतिशत समाजवादी आंदोलन में थे। बाकी कम्युनिस्ट या आर.एस.एस. के थे। आर.एस.एस. वाले गुप्त तरीके से शाखा में जाते थे। दो-चार प्रतिशत ही ऐसे थे जिनके बारे में लोग जानते थे कि वे आर.एस.एस. में 1952-53 में कम्युनिस्ट पार्टी में रणदिवे की 'लाइन' अपनी चमक खोने

लगी थी। उन्हीं दिनों मैंने बलिया में सोशलिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी की हैसियत से काम शुरू किया।

1952 के आम चुनाव में सोशलिस्ट पार्टी काफी अच्छा परिणाम दिखाएगी, यह उम्मीद थी। कम से कम बिहार में लोग यह समझते थे कि वैकल्पिक सरकार बनेगी। 1952 में हम लोगों को भी बहुत आशा थी। एक अजय कुमार बसु थे जो डीएसपी हो गए थे। वे फ्रीडम फाइटर थे। इस्तीफा देकर 1952 का चुनाव लड़ने आए। मुझे उनका प्रचार करने निकलना था। कोई और साथ नहीं था। मेरे साथ केवल एस.के. श्रीवास्तव होते थे। वे आर्डिनेन्स फैक्टरी के नेता थे। उनके पास मोटर साइकिल थी। मोटर साइकिल पर एक लाल झण्डा लगाकर हम दोनों जाते थे। मैं पीछे बैठता था। एस.के श्रीवास्तव मोटर साइकिल चलाते थे। चौराहे पर इलाहाबाद में मैं नारा लगाता था, 'इंकलाब', वे कहते थे- 'जिन्दाबाद'। दूसरा नारा था- 'कमाने वाला खाएगा', 'लूटने वाला जाएगा।' इलाहाबाद के चौराहे पर 25 से 50 तक आदमी खड़े हो जाते थे। मैं समाजवाद पर लम्बा भाषण करता था। 10-15 मिनट के भाषण के बाद फिर मोटर साइकिल चल पड़ती थी दूसरे चौराहे की ओर। हम लोगों के चुनाव प्रचार का यही तरीका था। शाम को बैठकर तय करते थे कि कल कहाँ चलना है। अगले दिन वहाँ इसी प्रकार से नुक्कड़ सभाएँ करते थे।

उरई जिले का एक लड़का था जमीपाल सिंह। वह चुनाव के दौरान काफी सक्रिय था। मतदान के समय उसने हमारे एक और साथी सोहनवीर सिंह तोमर जी से कहा : बड़ी गड़बड़ है, कोई वोटर हम लोगों के पास आता ही नहीं, जबकि हम लोगों ने काउंटर हर जगह लगाए थे। वहाँ 10-10 लड़के बैठे थे। तोमर जी बहुत बुद्धिमान आदमी थे। वे परिस्थितियों की अनुकूल व्याख्या करने में माहिर थे। उन्होंने जमींपाल से कहा : घबराओ मत, जितने कांग्रेस के काउंटर से वोट डालने जा रहे हैं, वे सब हम लोगों के ही वोटर हैं। डरकर हमारे काउंटर पर नहीं आ रहे हैं। लेकिन तोमर जी के आशीर्वाद की सब कलई खुल गई जब नतीजा आया। सबकी जमानत ही जब्त हो गई। मुझे याद है कि नतीजा जब आ रहा था तब एक दिन 'लीडर' अखबार ने छापा- आचार्य नरेंद्रदेव फेसिंग डिफीट। कोई लड़का सिविल लाइंस गया था, वह लौटकर हिन्दू होस्टल में आया और खबर फैला दी कि लीडर ने छाप दिया है- 'आचार्य नरेंद्रदेव फेसिंग डिफीट'। अब हल्ला मचा कि 'लीडर' बिरला का अखबार है, समाजवादियों के खिलाफ है, चलो जलाओ इसको। 'लीडर' अखबार को जलाओ। लड़के हैं? फिर उन्हें समझाया कि जरा रुक जाओ। पता लगा लें कि सच क्या है। थोड़ी थे। मैंने पूछा, क्या हंगामा कुछ देर के बाद मैंने किसी को भेजा कि पता लगाओ। जानकारी मिली कि काउंटिंग हो रही है और हम लोग काफी पीछे हैं। हम सब एक-दो दिन उदास पड़े रहे। 'लीडर' अखबार के लिए लड़कों के मन में उठा गुस्सा शान्त हो गया।

इस तरह रखी दाढ़ी

मेरे एक मित्र माताबदल जायसवाल उन दिनों पी-एच.डी. कर रहे थे। उनको कोई अपने यहाँ ठहरने नहीं देता था। वे गरीब थे। उन्हें टी.बी. हो गई थी। मैंने बीमार माताबदल जी को अपने यहाँ ठहराया। उन्होंने स्वामी प्राणनाथ पर किताब लिखी है। वे यूनीवर्सिटी में टॉप कर चुके थे। उन्होंने कहा, 'चंद्रशेखर, मुझे एक बड़ा अवसर मिला है। ओरिएंटल इंस्टीट्यूट (लन्दन) ने मुझे साक्षात्कार के लिए कार्ड भेजा है। मुझे हिन्दी में ध्वनि विज्ञान पर शोध करने के लिए साक्षात्कार हेतु बुलाया है। इंटरव्यू के लिए मुझे जयपुर जाना है।' तारीख नजदीक ही थी। उन्होंने बताया कि उन्हें फर्स्टक्लास का टिकट, रहने की जगह और भोजन के अलावा शायद 40 रूपये ऊपर से देंगे। कहने लगे, देखो, अगर हम लोग सेकेण्ड क्लास में भी चलेंगे तो बहुत पैसा बचेगा। तुम भी साथ चलो। मैं उनके साथ जयपुर गया। वहाँ उनके लिए खासाकोठी में कमरा बुक था। उस समय खासाकोठी के एक कमरे का किराया 40 रुपये था। उन्होंने कहा, तुम भी यहीं रुक जाओ। उनके कमरे में रहने पर 15-20 रुपये और देने पड़ते। साथ वाला कमरा लेता तो 40 रुपये लगते। मैंने कहा, इतना पैसा खर्च क्यों करेंगे?

मैं दूसरे होटल में चला गया। वहाँ दो रुपए में मुझे एक कमरा मिला। साथ में बाथरूम था। कमरे में एक चारपाई थी। रात को वहीं रुका। जाकर खाना खा लिया। हिन्दू होस्टल में हम लोग सेफ्टीरेजर नहीं रखते थे। नाई से दाढ़ी बनवाने की आदत हो गई थी। नाई आता था और होस्टल के कमरे में आकर दाढ़ी बनाता था। डेढ़ रुपया महीना लेता था। कई लड़के ऐसे नवाब थे कि उसे कहते थे कि मेरी दाढ़ी लेटे-लेटे ही बनाओ। बेचारा नाई कपड़ा लगा कर लेटे-लेटे ही उनकी दाढ़ी बना देता था। रोज दाढ़ी बनाने की आदत थी, इसलिए दाढ़ी खुजलाने लगी। फिर मैंने सोचा कि होटल से बाहर निकलकर दाढ़ी बनवा लूँ। लेकिन खासाकोठी के पास कोई सैलून नहीं था। मैं करीब आधे घंटे घूमता रहा। रास्ते में बहुत-से नाई मिले। वे ईंट रखकर बैठे थे। मुझे इतना बोध था कि इनसे दाढ़ी बनवाऊँगा तो परेशानी हो सकती है। मैं वापस लौट आया। दूसरे दिन भी दाढ़ी नहीं बनवाई। दो दिन के बाद मैंने सोचा कि इरादा तो समाजवाद लाने का है, दाढ़ी से ही परेशान हो जाएँगे तो क्या कर पाएँगे! मैंने दाढ़ी बनाना छोड़ दिया। इंटरव्यू में मेरे मित्र चुने नहीं गए। जयपुर से हम चितौड़ और अजमेर गए। अजमेर में उनका एक दोस्त था। बाद में मेरा कभी उससे सम्पर्क ही नहीं हो पाया। पति-पत्नी दोनों शिक्षक थे। पति किसी इंटरमीडिएट कॉलेज में लेक्चरर थे, पत्नी किसी गवर्नमेंट स्कूल में प्राध्यापिका थीं। उनके यहाँ हम लोग पाँच-छह दिन ठहरे। उनके जैसा अच्छा परिवार मैंने नहीं देखा। उनकी पत्नी हम सब को रात को खाना खिलाने के बाद एक गिलास गर्म दूध देती थी। सवेरे उठने पर हाथ धुलाने के लिए गर्म पानी का डोल लेकर खड़ी रहती थी। वहाँ से लौटे तो दाढ़ी बढ़ गई थी। मैं दाढ़ी न बनाने का निर्णय ले चुका था। आरएसएस वाले दोस्त कहने लगे कि अशोक मेहता बन रहे हो? मैंने कहा, नहीं, गोलवलकर बनने का विचार है, धीरे-धीरे वही बन जाऊँगा।

पी-एच.डी. करने का फैसला और बाधा

1952 के आम चुनावों के परिणाम के बाद पार्टी में घोर निराशा छा गई। एक प्रकार से पार्टी का काम ठप्प हो गया। मेरे मन में यह विचार आया कि अब पी-एच.डी. कर और कहीं अध्यापन का काम करना प्रारंभ करूँ। इस विचार से बनारस गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में नाम लिखवाया। प्रो. मुकुट बिहारीलाल जी राजनीति शास्त्र विभाग के अध्यक्ष थे। आचार्य नरेंद्रदेव जी कुलपति थे। मैंने शोध के लिए स्वयं विषय चुना 'इन्फ्लूएन्स ऑफ इकॉनामिक डेवलपमेंट ऑन पालिटिकल थाट्स'। मैंने इस विषय पर एक संक्षिप्त नोट बनाया। प्रोफेसर मुकुटबिहारी लाल उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मुझे बड़ा प्रोत्साहित किया और मैं भी लगन के साथ इस काम में लगा। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी का रणदिवे पीरिएड चल रहा था। गाजीपुर, बलिया और आजमगढ आदि में उस दल का बहुत जोर था। बलिया के एक गाँव में एक जमींदार घर के चार लोगों की हत्या हो गई। इस कारण कई जगह झगड़े हुए। हिंसा के इस माहौल पर सोशलिस्ट पार्टी ने एक बैठक रखी। बैठक काशी विद्यापीठ में हुई। उसमें यह तय किया गया कि एक समिति बनाई जाए जो लोगों को हिंसा का रास्ता छोड़कर अहिंसक प्रतिरोध के लिए तैयार करे। उस समिति के संयोजक फरीदुल हक अन्सारी बनाए गए। किसी ने सुझाव दिया कि फरीदुल साहब की उम्र ज्यादा है, बहुत दौड़-धूप नहीं कर सकते हैं, लिखा-पढ़ी का भी काम होगा इसलिए उनका कोई सहायक होना चाहिए। राजनारायण जी ने तुरंत मेरा नाम पेश कर दिया। उन्होंने कहा, मेरी राय में चंद्रशेखर को बनाया जाए। बाकी लोगों की भी यही राय थी। मेरे गाइड प्रोफेसर मुकुट बिहारी लाल भी उसमें बैठे थे। उन्होंने कहा : नहीं, चंद्रशेखर जी का नाम आप लोग मत रखिए। उन्हें दो वर्ष के लिए छुट्टी दीजिए। इस बीच वे अपनी पी-एच.डी. पूरी कर लेंगे। इन्होंने बहुत अच्छा विषय चुना है। मैं चुप बैठा था। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। फिर अचानक आचार्य नरेंद्रदेव जी बोले : चंद्रशेखर जी, इन प्रोफेसरों के चक्कर में आप मत आइए, इन्होंने बहुतों की ज़िन्दगी बर्बाद की है। आपकी थीसिस कौन पढ़ेगा, अगर देश ही नहीं रहेगा? आप देश बनाने के काम में लगें। उस दिन मैंने तय किया कि पी-एच.डी. नहीं करूंगा। और तब से देश बनाने के काम में लगा। यह 1952 के आसपास की बात है। अब तक देश का कुछ बना नहीं सका।

जीवन के दो प्रेरणा पुरुष

मैंने जीवन में जितने भी लोगों को देखा, वे चाहे साधु-महात्मा हों, राजनीतिक मैं वैसा नहीं हो सकता। ठीक है, इन्हें अवसर मिला है, प्रयास किया होगा, विद्वान हैं, उच्च विद्वान, किसी को देखकर मुझे ऐसा नहीं लगा कि यह आदमी कुछ अलग है और पढ़े-लिखे हैं, लेकिन दूसरों की तरह ही हैं। आचार्य नरेंद्रदेव को देखते ही मुझे यह लगा कि इस आदमी जैसा होना मेरे वश का नहीं है। ठीक यही भावना मेरे मन में अवधूत भगवान राम के लिए भी थी। वे बनारस के रहने वाले थे। मैं दिल्ली में कम्युनिकेशन बिल्डिंग के अन्तर्गत 'यंग इंडियन' चलाता था। एक दिन वे मार्कंडेय सिंह के साथ मेरे ऑफिस में आ गए। 'यंग इण्डियन' 1970 शुरू किया था। 1971 के शुरू में अवधूत जी आए होंगे। फिर धीरे-धीरे उनसे सम्पर्क हुआ।

आचार्य नरेन्ददेव में मैंने पाया कि उनके मन में किसी के लिए कोई भेदभाव नहीं है। चाहे कोई बड़ा राजनीतिक हो या गाँव का साधारण आदमी, किसी से भी मिलते ही उनका एक ही प्रश्न होता था : कहिए, कैसे हैं? प्रसन्न तो हैं न? टण्डन जी आदि के आने पर वे बेबाक हँसी हँसते थे।

ज्वाइंट सेक्रेटरी का पदभार

लखनऊ आया, जब मुझे अध्यक्ष राजाराम शास्त्री का तार मिला तब। तार था 'कम इमीडिएटली टू मीट आचार्य जी'। यह 1954-55 की बात है। पार्टी में टूट हुई तो राजनारायण आदि ने पार्टी के दफ्तर पर कब्जा कर लिया था। हमारे पास कोई दफ्तर नहीं था। यह बात किसी आचार्य जी से कही होगी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि आचार्य जी ने मुझे क्यों बुलाया है? पहले मैं राजाराम शास्त्री जी के पास गया। उनसे पूछा। उन्होंने कहा : आचार्य जी आपको ज्वाइंट सेक्रेटरी बनाना चाहते हैं। मैंने शास्त्री जी से कहा कि ज्वाइंट सेक्रेटरी नहीं बनूंगा। मैं यह काम नहीं कर सकता। उत्तर प्रदेश में मेरा कोई सम्पर्क नहीं है। आचार्य जी उस समय लखनऊ में थे। उनके घर पहुंचते ही शास्त्री जी ने उन्हें बता दिया कि मैं तैयार नहीं हूँ। मिलने पर आचार्य जी ने पूछा : तैयार क्यों नहीं हैं? मैंने कहा : आचार्य जी, मुझसे यह काम नहीं होगा। उन्होंने कहा : सोच लीजिए, काम करते-करते ही आता है। ऑफिस का काम तो आप कर ही सकते हैं। मैंने कहा, यह काम मेरे लिए मुश्किल है। आचार्य जी ने जब दो-तीन बार दबाव डाला तो मैं उनके सामने खुला। मैंने उनसे कहा कि दल के नेताओं से मेरी नहीं पटेगी। बाबू गेंदा सिंह और त्रिलोकी सिंह आदि से मेरा झगड़ा हो जाएगा। मेरा स्वभाव इनसे नहीं मिलता। इनमें से कोई नहीं है जिसके साथ मेरा मतैक्य हो। आचार्य जी ने कहा : क्या हुआ अगर कोई नहीं है, मैं तो हूँ। आपको मेरे ऊपर भी विश्वास नहीं है? मैंने कहा : आचार्य जी, अब मेरे पास कोई तर्क नहीं रह जाता, आप कह रहे हैं तो मैं तैयार हूँ। इस तरह मैं ज्वाइंट सेक्रेटरी हो गया।

मेरा पहला वक्तव्य

सरकार का स्वशासन पर जोर था। इस विचार पर समझ के लिए नगरपालिकाओं को अधिक अधिकार देने की बात चल रही थी। 1954 की बात है। तभी एक मामला उछला। मैंने खुद टाइप करके अपना बयान बनाया और उसे नेशनल हेराल्ड में भेज दिया। वह छपा। अखबारों में तो बयान छपते ही रहते हैं। इस बयान का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यह मेरा पहला बयान था। चेलापति राव ने अपने सहयोगियों के सामने उस बयान की तारीफ की थी। वे नेशनल हेराल्ड के संपादक थे।

मेरा बयान सरकार के खिलाफ था। उसे छापने से पहले स्टाफ ने चेलापति राख से पूछा था। जब ज्वाइंट सेक्रेटरी होकर आया था, उस वक्त ओमप्रकाश जी अस्थायी रूप से बलिया में कार्य कर रहे थे। वे सतीशचंद्र डिग्री कालेज, बलिया में लेक्चरर थे। उनको तार रोक बुलाया गया। वे नौकरी छोड़कर आ गए। काशी विद्यापीठ से सत्यप्रकाश मित्तल आए। उनको भी बुला लिया। तब केएमपीपी का विलय हो चुका था। त्रिलोकी बाबू ने अमीनाबाद के पास लाटूस रोड पर केएमपीपी का ऑफिस बनाया था। एक छोटा-सा कमरा था और खाना बनाने की जगह थी। वहाँ सीढ़ियों से चढ़कर जाते थे। जब सीढ़ियाँ चढ़ते थे, तो लगता था कि अब टूट जाएंगी। वहीं हम लोग रहते थे।

कुछ दिनों बाद मैंने ओम प्रकाश जी से कहा कि आप विधानमण्डल पार्टी से सम्पर्क रखिए। असेंबली के मेम्बर पार्टी को दस रुपए महीना देते थे। ओम प्रकाश जी वसूल करने जाते

उपेन्द्र वाजपेयी हमारी पार्टी ऑफिस में नियमित रूप से आने लगे। जब पार्टी अलग हुई तो गया में हमारी पार्टी का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन के लिए पीएसपी ने एक थीसिस बनाई। यह गया 'थीसिस' के नाम से जानी जाती है। जब वह थीसिस पूरी हो गई तो आचार्य जी ने मुझे बुलाकर कहा कि इसे प्रकाशित करना है। लेकिन जब तक राष्ट्रीय कार्यसमिति इसको स्वीकृत न करे, यह प्रेस में नहीं जानी चाहिए। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि भरसक कोशिश करेंगे।

थे, जब वसूल नहीं हो पाता था, खिन्न होकर लौट आते थे। फिर दोबारा जाते थे। एक दिन उन्हें शायद बहुत बुरा लगा होगा। उन्होंने आकर कहा : आप किसी और को भेजिए। अब मैं नहीं जाऊँगा। मैंने पूछा, क्यों? उन्होंने बताया : सब कहते हैं कि उनकी आर्थिक हालत खराब है, हम 10 रुपए नहीं दे सकते। सबने बैठकर राय किया कि आज से कोई वहाँ नहीं जाएगा, चाहे जैसे भी चलाना पड़ेगा, हम काम चलाएंगे। खैर, हम लोगों ने कुछ दिन चना चबेना खाकर गुजारे। रात को खिचड़ी बनाते थे। खिचड़ी भी अपने हाथ से बनानी पड़ती थी। वे लोग मुझे बर्तन नहीं धोने देते थे। अपने आप धो लेते थे। रात को देर से खाना खाते थे। बर्तन वैसे ही जूठे पड़े रहते थे। सब लोग देर तक सोते थे। सवेरे मैं जल्दी उठ जाता था। उन सबके जागने से पहले बर्तन धो देता था।

एक वरिष्ठ नेता थे दामोदर स्वरूप सेठ। वे वहीं पार्टी ऑफिस में आकर ठहरते थे। बरेली के थे। मुँह अँधेरे जल्दी उठते थे। उन्होंने देखा, कोई बर्तन धो रहा है। पूछा। कौन है? मैंने कहा, सेठ जी, मैं चंद्रशेखर। मैं ज्वाइंट सेक्रेटरी था इसलिए वे मुझे जट साहब कहते थे। उन्होंने उस समय कुछ नहीं कहा। नहा-धोकर तैयार हो गए। ये जब लखनऊ आते थे, तब आचार्य जी के पास जरूर जाते थे। वे आचार्य जी के पास पहुंचे तो वहाँ दो-चार लोग बैठे थे। उन्होंने आचार्य जी से कहा : आप तो बड़े भारी नेता बने हुए हैं, लेकिन उस लड़के को किस काम के लिए बुला लिया। एम.ए. पास करके चंद्रशेखर आपके यहाँ बर्तन धोएगा। आप लोग वहाँ एक चपरासी का इंतजाम नहीं कर सकते? वहाँ एक और सज्जन थे, आचार्य जी ने कहा : मुझे मालूम नहीं। किसी ने कहा कि इन पर क्यों बिगड़ रहे हैं। इनकी तबीयत ठीक नहीं है। सेठ जी बोले। आप बता दीजिए, इनकी तबीयत कब ठीक रहती है, तब इनसे बात करें। उसके बाद जब मैं गया तो आचार्य जी ने मुझसे पूछा : आपके ऑफिस में कोई चपरासी नहीं है। मुझे सन्दर्भ का पता नहीं था। मैंने कहा : नहीं, कोई जरूरत ही नहीं है। इतना काम नहीं है। उन्होंने कहा आपने मेरी बड़ी लड़ाई करा दी। सेठ जी बिगड़कर गए हैं। उनसे भला कौन लगे वह तो बिगडते ही चले गए मैंने सारी बात पूछी तब उन्होंने बताया कि सेठ जी क्या कह रहे थे।

पार्टी ऑफिस में रहकर काम करने के ये दिन परेशानियों से भरे थे। खाना खाने का कोई ठिकाना नहीं रहता था। उन दिनों देवरिया के विधायक राजवंशी बाबू हफ्ते में एक-दो दिन घर बुलाकर हम लोगों को अच्छा खाना खिला देते थे। वे अपने हाथ से भी कुछ बनाते थे और माँ की तरह स्नेह से खिलाते थे। उन जैसा ममत्व से पूर्ण व्यक्तित्व किसी और में नहीं देखा। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उनके पुत्र रामायण राय मेरे घनिष्ठ मित्रों में से थे। वे भी आजादी के आंदोलन में जेल गए। बाद में विधानसभा और लोकसभा के भी सदस्य बने। वैसे कई बार भूखे पेट भी रहना पड़ा।

लखनऊ में उन्हीं दिनों मेरा परिचय हुआ पत्रकार उपेन्द्र वाजपेयी से। उपेन्द्र वाजपेयी के पिता बड़े विद्वान थे। उनके यहाँ हम लोग कभी-कभी जाते थे। उपेन्द्र वाजपेयी हमारी पार्टी ऑफिस में नियमित रूप से आने लगे। जब पार्टी अलग हुई तो गया में हमारी पार्टी का सम्मेलन हुआ। सम्मेलन के लिए पीएसपी ने एक थीसिस बनाई। यह गया 'थीसिस' के नाम से जानी जाती है। जब वह थीसिस पूरी हो गई तो आचार्य जी ने मुझे बुलाकर कहा कि इसे प्रकाशित करना है। लेकिन जब तक राष्ट्रीय कार्यसमिति इसको स्वीकृत न करे, यह प्रेस में नहीं जानी चाहिए। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि भरसक कोशिश करेंगे। उपेन्द्र जी को इसकी भनक लग गई। इसके बाद वे रोज आकर हमारे पास बैठ जाते थे। थीसिस के बारे में रोज पूछताछ करते थे। मैं उनसे दो टूक कह देता था कि मुझे नहीं मालूम। उन्हें यह भी पता चल गया था कि वह थीसिस कहीं छप रही है, लेकिन मुझसे वे कोई जानकारी हासिल नहीं कर पाए। लेकिन एक्जीक्यूटिव की मीटिंग से एक दिन पहले उन्होंने थीसिस का एक अध्याय किसी तरह राजाराम शास्त्री (कानपुर) से हासिल कर लिया और अगले दिन किसी अखबार में प्रकाशित करा

दिया। जिस दिन एक्जीक्यूटिव बैठी, उसी दिन सुबह थीसिस का एक हिस्सा छपा देखकर आचार्य जी बहुत हँसे। कहने लगे, यह कैसे छप गया? इसके बाद वाजपेयी जी बहुत दिनों तक मुझे कहते रहे कि थीसिस के लिए बहुत दौड़ाया था। एक चैप्टर भी नहीं दिया था। मैं भी उनसे कहता रहा, आपने भी तिकड़म करके राजाराम शास्त्री से एक अध्याय ले ही लिया। वैसे यह मुझे मालूम हो गया था।

इसके बाद हमने दल को संगठित करना शुरू किया। उस समय सोशलिस्टों में दो धाराएँ थीं। एक ओर थे राजनारायण, प्रभुनारायण सिंह, रामचंद्र शुक्ल और अर्जुन सिंह भदौरिया आदि। ये सब जाने-माने लोग थे। दूसरी ओर था मैं, जिसका किसी से परिचय नहीं था। मेरे साथ थे नारायणदत्त तिवारी। उन्हें जब राजनारायण वगैरह घुड़क देते थे तो वे कुछ नहीं बोलते थे। अधिकतर कन्नी काट जाते थे। वैसे पार्टी की बैठकों में बाकायदा दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात कहते थे। बैठकों का माहौल बहुत जीवंत और दिलचस्प होता था। उन्नाव में एक बार मेरा और राजनारायण जी का एक साथ भाषण हुआ। उसके बाद सभी उत्सुक थे कि साथी खजान सिंह क्या बोलते हैं? खजान सिंह वहाँ के स्थानीय नेता थे और विधायक भी। खजान सिंह ने राजनारायण की कड़ी आलोचना की। कहा : राजनारायण, तुमको गंगा की पवित्र धारा में केवल विष्टा ही दिखाई पड़ी। तुम्हें समाजवादी आंदोलन में आचार्य नरेंद्रदेव जैसे लोग दिखाई नहीं देते लोग इस पर काफी हँसे।

कैसे-कैसे समाजवादी

पार्टी के संगठन के सिलसिले में हम लोग लगातार घूम रहे थे। मोदी नगर में हड़ताल हुई थी। हम लोगों के साथ सोहनवीर सिंह तोमर, हुकम सिंह, सरयू प्रसाद त्यागी और महावीर सिंह जैसे नौजवान थे। एक दिन हमारे पास सोहनवीर सिंह तोमर का तार आया : 'मीटिंग ऐट बड़ौत, कम पोजीटिवली ब्रिंग वन एमपी विद यू।' मैं चिन्तित हुआ कि बड़ौत कैसे जाएँगे? कौन सांसद जाने के लिए राजी होगा? उस जमाने में हमारे पास एक-दो ही सांसद थे-एक राजाराम शास्त्री, जो कानपुर के लेबर लीडर थे और दूसरे रामजीलाल वर्मा। रामजीलाल वर्मा को तो फोन ही नहीं हो सकता था। देवरिया में उन दिनों फोन से सम्पर्क करना आसान नहीं था। अन्त में तय किया कि शास्त्री जी को ले चलूँ। तीन घंटे में कानपुर फोन मिला। मुझे तब तक अमीनाबाद पोस्ट आफिस में बैठना पड़ा, पार्टी ऑफिस में फोन नहीं था। मैंने शास्त्री जी से कहा कि बड़ौत चलना है। उन्होंने इन्कार करते हुए कहा कि बड़ौत कौन जाएगा! वहाँ आसानी से पहुँचना मुश्किल है। फिर मैंने बड़ी मिन्नत की। अन्त में शास्त्री जी थोड़े पिघले। कहा : एक शर्त पर चल सकता हूँ कि आप भी साथ चलिए। मैंने कहा : शास्त्री जी, मेरे सामने मुश्किल यह है कि बड़ौत जाने के लिए मेरे पास खर्च कहाँ से आएगा? वे मानने को तैयार नहीं थे और मुझे उनकी शर्त स्वीकार करनी पड़ी। मैंने किसी से कुछ रुपए के से इंतजाम किया। उस समय किराया बहुत कम लगता था। कानपुर पहुँचा तो शास्त्री जी मिले। उन्होंने बताया कि उनका तो रिजर्वेशन है। मैं ट्रेन में कहीं बैठ जाऊँ। उस समय जनता गाड़ी चली थी। थर्ड क्लास में सोने के लिए रिजर्वेशन पहले पहल चला था। शास्त्री जी आरक्षित बर्थ पर जाकर सो गए। मैं किसी सामान्य तीसरे दर्जे के डिब्बे में घुस गया। मेरे पास दो झोले थे। एक में पहनने के कपडे थे, दूसरे में चादर ओढने और बिछाने के लिए। मैं डिब्बे में दो टायलेटों के बीच की खाली जगह में बैठ गया। और बैठे-बैठे दिल्ली पहुंचा।

वह गाड़ी शाहदरा में नहीं रुकती थी। हम लोग दिल्ली लेट पहुँचे। राजाराम शाला जी वेटिंग रूम में गए। उसके बाद उन्होंने कहा कि कुछ नाश्ता करना चाहिए। मैने हां कहा। सोचा, सांसद हैं, नाश्ता तो करा ही सकते हैं। लेकिन मन में एक भय भी था। इसलिए शास्त्री जी ने तो आमलेट आदि खाया लेकिन मैंने थोड़ा-सा ही कुछ लिया। मैने ठीक ही किया था क्योंकि नाश्ते

उन्नाव में एक बार मेरा और राजनारायण जी का एक साथ भाषण हुआ। उसके बाद सभी उत्सुक थे कि साथी खजान सिंह क्या बोलते हैं? खजान सिंह वहाँ के स्थानीय नेता थे और विधायक भी। खजान सिंह ने राजनारायण की कड़ी आलोचना की। कहा : राजनारायण, तुमको गंगा की पवित्र धारा में केवल विष्टा ही दिखाई पड़ी। तुम्हें समाजवादी आंदोलन में आचार्य नरेंद्रदेव जैसे लोग दिखाई नहीं देते

के पैसे मुझे ही देने पड़े। इसके बाद हम जाने के लिए शाहदरा पहुँचे, कि सवेरे की ट्रेन मिल जाएगी। लेकिन वह ट्रेन जा चुकी थी। शास्त्री जी ने कहा कि मैं तो अब दिल्ली वापस चला जाऊँगा। लेकिन मुझसे नहीं कहा कि तुम भी चलो। मेरे पास बहुत कम पैसे रह गए थे। उन दिनों टैक्सी नहीं चलती थी। इसलिए शास्त्री जी के दिल्ली जाने के लिए ताँगा तय किया गया। 9 रुपये पर तांगा तय हुआ। मैंने गुस्से में पूछा कि क्या तांगे का पैसा मैं दे दूँ? शास्त्री जी बोले : हाँ, हो तो दे दीजिए। मैंने ताँगे के पैसे दे दिया। मेरे पास कुल ढाई या तीन रुपये बचे थे। मुझे यह नहीं मालूम था कि शाहदरा से बड़ौत का टिकट कितने का लगता है। मैंने रेलवे स्टेशन पर लगी सारी सूचियाँ पढ़ डालीं लेकिन रेल भाड़े की सूची कहीं नहीं थी। भूख बहुत तेज लगी थी। लेकिन खाना इसलिए नहीं खा रहा था कि पता नहीं टिकट के लिए कितने पैसों की जरूरत हो। काफी देर बाद बुकिंग क्लर्क आया। मैंने उससे टिकट लिया। उसके बाद मेरे पास सिर्फ एक-सवा रुपए बच गए थे। मैंने हल्का-सा कुछ खाकर चाय पी और ट्रेन में चढ़ा। पहले उस ट्रेन में कोई खिड़की नहीं होती थी। अगर खिड़की होती भी थी तो शीशे टूटे होते थे। ट्रेन खट-खट करती

चलती थी। ढाई बजे चलकर 8 बजे रात में बड़ौत पहुँचती थी। मेरे डिब्बे में एक और लड़का बैठा हुआ था। उसने टेरलीन की कमीज और पैंट पहन रखी थी। उसकी ट्रेन भी मेरी ही तरह छूट गई थी। थोड़ी देर के बाद वह लड़का बैठे-बैठे सो गया। मैंने देखा, नींद में वह लड़का जाड़े से काँप रहा है। मेरे मन में आया कि इसे मैं कुछ ओढ़ने को दूँ। मेरे पास दो चादरें थीं, एक ओढ़ने की। दूसरी बिछाने की। मैंने सोचा कि ऊनी चादर अगर उसे दूंगा तो वह गन्दी हो जाएगी। इसलिए मैंने बिस्तर की चादर दोहरी करके उसके ऊपर डाल दी। उसे नींद में बहुत आराम मिल गया। जब ट्रेन बड़ौत के नजदीक पहुँच गई तो मेरे मन में द्वंद्व हुआ कि क्या करूँ? वह अपने भाई के पास शामली जा रहा था। वहाँ पहुँचने में उसे डेढ़-दो घंटे लगेंगे। अगर मैंने उससे अभी चादर ले ली तो वह ठंड में अकड़ जाएगा। इसलिए इससे चादर मुझे वापस नहीं लेनी चाहिए। मैंने सोचा, बिछाने की चादर की तो उतनी जरूरत नहीं है। इसलिए मैंने वह चादर उसी के पास छोड़ दी और बड़ौत उतर गया।

कुछ खटका हुआ तो वह लड़का जग गया और कंपार्टमेंट के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। मुझे उसकी सूरत आज भी याद है। हाथ में चादर लिए वह दरवाजे पर परेशान-सा खड़ा था। कहा : भाई साहब, आप अपनी चादर भूले जा रहे हैं। मैंने बिना रुके उत्तर दिया : भूल नहीं रहा हूँ, छोड़े जा रहा हूँ। ट्रेन खिसक रही थी। उसने हड़बड़ी में पूछा : आपको यह चादर कहाँ पहुँचा दूं? इस पर मैंने कहा : बड़ी लम्बी दुनिया है, कहीं न कहीं मिल जाएँगे।

बड़ौत स्टेशन पर मैंने जेब टटोली तो पाया कि मेरे पास सिर्फ आठ आने शेष थे। स्टेशन से बाहर निकला तो सीधे रिक्शे पर बैठ गया। भाड़ा इसलिए तय नहीं किया कि पता नहीं कितना माँग ले। मैंने रिक्शेवाले से कहा कि चलो फूलन चौधरी के घर। उन्हें सब लोग जानते थे। रिक्शा मुझे वहाँ ले गया। मैंने दरवाजा खटखटाया। सोहनवीर सिंह तोमर निकले। उन्होंने हालचाल पूछने के बाद सूचना दी कि सभा हुई थी। आपस में ही हम लोगों को जो बोलना था, बोल चुके। इसके बाद तोमर ने कहा कि चलिये, हाथ धोइए, खाना तैयार है। मैंने तोमर से कहा कि पहले इस रिक्शेवाले को भाड़ा दो। अगले दिन तोमर से किराए लेकर मैं लखनऊ पहुंचा।

इसके बाद भी शास्त्री से छोटी-छोटी मुलाकातें होती रहीं। लेकिन काफी अर्से बाद उनसे हुई एक और मुलाकात की चर्चा के बिना उनसे जुड़ी यादों का विवरण अधूरा रहेगा। 1974 में मैं कांग्रेस चुनाव समिति का सदस्य था। कांग्रेस के टिकटार्थियों की भीड़ हर सदस्य के घर के सामने लगी रहती थी। मैं थोड़ी-थोड़ी देर पर कमरे से बाहर निकलता था और लोगों के आवेदन-पत्र ले लेता था। कांग्रेस के टिकट मांगने वालों की उसी भीड़ में मुझे कानपुर वाले राजाराम शास्त्री दिखे-टोपी लगाए, कुरता-पाजामा पहने। मैंने पूछा : शास्त्री जी, आप कैसे? शास्त्री ने कहा : आप तो जानते है, मैं जीवनभर समाजवादी रहा हूँ। समाजवाद के लिए काम किया। अब इस बुढ़ापे में फिर से टिकट चाहता हूँ। शास्त्री जी को देखते ही पुरानी यादें एक दम सामने आ गई। शाहदरा के दुकान डबल रोटी का वह हलका नाश्ता और चाय, शास्त्री जी का तांगा, उनका वह निर्लिप्त व्यवहार, वह अपनी बेबसी...पुरानी यादों से अचानक में वर्तमान में लौटा और शास्त्री जी से बोला कि आपको टिकट जरूर मिलेगा, यह बात अलग है कि उन्हें टिकट नहीं मिला। वे मुझे बता रहे थे कि वे समाजवादी हैं!

डॉ. राममनोहर लोहिया से पहली मुलाकात

डॉ. लोहिया से मेरी पहली मुलाकात 1952 में ही हो गई थी। वे चुनाव प्रचार करने आए थे। इस दौरान एक बड़ी मजेदार बात हुई। मैं शहर पार्टी का सेक्रेटरी था। लोहिया साहब ने मुझसे पूछा : इस जिले में किसका जोर ज्यादा है? मैंने कहा : आले हसन का। आले हसन एक मुख्तार थे। बड़े मशहूर थे। उनके मुवक्किलों ने हिन्दी, उर्दू में हजारों पर्चे बाँटे थे। उनके प्रचारक मुख्तार साहब से कहते थे कि सब लोग आप ही के नाम की चर्चा करते हैं। वे उत्साहित होकर कहते थे कि इन पर्चों को ले जाओ और बड़ी संख्या में बाँटो। उनके समर्थक पर्चों का गट्ठर ले जाते थे। वे उसे बाँटते थे, या फेंक देते थे, कौन जाने! लोहिया जी ने आले हसन के क्षेत्र में कार्यक्रम के बाद मुझसे कहा कि चंद्रशेखर आले हसन का जोर अन्दर-अन्दर है क्या? बाहर तो कुछ दिखाई नहीं दिया।

लोहिया जी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे नए-नए विचार देते थे। उनके व्यक्तित्व की दूसरी दिलचस्प विशेषता यह थी कि उन्हें पैसे से लगाव नहीं था। व्यक्तियों से भी उनका कोई खास लगाव नहीं था। उनमें यायावर की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा थी। आज मन हुआ तो यहाँ गए, कल कहीं और।

मैंने बलिया में एक सम्मेलन किया था-ददरी के मेले के मौके पर। आचार्य जी को उसमें जाना था। आचार्य जी पत्रकार पी. डी. टण्डन के यहाँ इलाहाबाद में ठहरे थे। सुबह उनसे मिलने पहुंचा। आचार्य जी दमा के रोग से बीमार थे। रात में उन्हें दमे का दौरा पड़ा था। उन्हीं के पास डॉ. लोहिया बैठे थे। आचार्य जी ने मुझसे कहा कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, अब मैं बलिया नहीं जा सकूँगा। डॉ. लोहिया बैठे हैं, इन्हें लेकर बलिया जाइए। लोहिया जी ने मुझसे कहा कि मुझे तो कलकत्ता जाना है। मैं बलिया कैसे जा सकता हूँ? मैंने लोहिया जी से कहा कि बलिया का कार्यक्रम करके अगले दिन कलकत्ता पहुँच जाएँगे। उन्होंने कहा कि कैसे पहुँचूंगा?

लोहिया जी को यात्रा की बहुत जानकारी रहती थी। मैंने कहा : पंजाब मेल आपको बक्सर में मिल जाएगी। वह गाड़ी वहाँ से छह-सात बजे चलती है, जो आपको सुबह आठ-नौ बजे कलकत्ता पहुँचा देगी। उन्होंने कहा कि बलिया से बक्सर मैं कैसे जाऊँगा, सड़क तो बहुत खराब है? मैंने उनसे कहा कि आपके लिए जीप की व्यवस्था हो जाएगी। उस समय जीप मिलना बहुत मुश्किल होता था। तय करने के बाद मैं बलिया लौट आया। निश्चित तारीख को मैं लोहिया जी को लेने के लिए स्टेशन

पहुंचा। इलाहाबाद से एक छोटी लाइन की गाड़ी आती थी उसी से वे आए। गाड़ी विलम्ब से बलिया पहुँची। सात बजे सवेरे आती थी, नौ बजे पहुंची। स्टेशन पर उतरे तो उनके चेहरे पर तनाव था। पता नहीं उन्हें किसने क्या खबर दे दी थी! उन्होंने उतरते ही पूछा कि क्या मेरे लिए जीप का इंतजाम किया है? मैंने 'हाँ' कहा। स्टेशन पर उनके सम्मान में कार का प्रबंध था। हम स्टेशन से बाहर निकले। जब कार में बैठने लगे तो उन्होने मुझसे पूछा कि चंद्रशेखर, मेरा अभी कोई प्रोग्राम तो नहीं है। मैंने कहा कि अभी तो नहीं है, ग्यारह बजे हैं। लोहिया जी का तेवर बदल गया। कहने लगे इतने कम समय में मैं तैयार कैसे हो पाऊँगा? मैंने कहा कि अभी तो दो घंटे हैं। तैयार होने में इससे ज्यादा समय क्या लगेगा। मैने स्वाभाविक ढंग से यह बात कही। उस समय तक मैं यह अनुमान भी नहीं कर सकता था कि तैयार होने के लिए दो घण्टे से अधिक समय क्यों चाहिए। हमने उनके ठहरने का इंतजाम एक बड़े शरीफ आदमी राय बहादुर सुदर्शन सिंह जी के यहाँ किया था। हम राय बहादुर के दरवाजे पर पहुंचे। वे बड़े जमींदार थे। उनके घर के सामने बरामदा था। हम बरामदे में गए। घर में घुसने से पहले लोहिया जी ने अचानक पूछा : जीप कहाँ है जिससे मैं बक्सर जाऊँगा? मैंने उनसे कहा कि डॉक्टर साहब, जीप तो आपको शाम को चाहिए। वे मेरी बात लगभग अनसुनी करते हुए बोले : झूठ बोलते हो, किसी जीप का इंतजाम नहीं है। झूठ बोलकर लोग कार्यक्रम बनवा लेते हैं। मैं चुप रहा। फिर यह बात जब उन्होंने दो-तीन बार दोहराई तो मेरे लिए चुप रहना असम्भव हो गया। मैंने उनसे कहा : डॉ. राममनोहर लोहिया केवल आप ही ईमानदारी के पुतले नहीं हैं, मैंने आपको बुलाया नहीं था, मैंने आचार्य जी को बुलाया था। उनके कहने पर आप आए हैं। आप मेहरबानी करके तशरीफ ले जाइए। वे शायद समझ गए झूठ नहीं बोल रहा था। आगे मैंने कहा : आप आ गए, इसके लिए धन्यवाद। लेकिन अब कृपा करके जाइए और जरा औरों की भी इज्जत रखिए।

आज खुद मुझे अपने उस कथन पर आश्चर्य होता है कि कैसे अपने अत्यंत युवा दिनों में मैंने एक वरिष्ठ व्यक्ति को साफ और दो टूक बात कह दी थी। मैं समझौतापरस्त नहीं हूँ, मैं खुद को झूठा कहा जाना बर्दाश्त नहीं कर सका। लोहिया से गर्म बातचीत के बाद मैं बरामदे से नीचे उतर आया। वहाँ एक लड़का खड़ा था। मैंने उससे कहा कि देखो, वहाँ जीप खड़ी है। उसमें लोहिया जी को बिठाओ और उन्हें बक्सर पहुंचा दो। लोहिया जी मुझे एकटक देखते रहे। गए नहीं। थोड़ी देर बाद तैयार होकर ग्यारह बजे मीटिंग में पहुँचे। तीन-चार सभाएँ थीं, वे सब में गए। मैं उन सभाओं में नहीं जा पाया क्योंकि मुझे लोगों के ठहरने-खाने का इंतजाम करना था। बाद में मुझे पता चला कि लोहिया जी ने काफी अच्छे भाषण दिए।

अन्तिम भाषण ददरी मेले के युवक सम्मेलन में हुआ। उस सम्मेलन में सनत मेहता गुजरात के साथियों के साथ आए थे। उसमें अरुणा जी भी थीं। तब उन दोनों की शादी नहीं हुई थी। काफी उम्मीदों से भरे हुए ये लोग समाजवादी आंदोलन में सब कुछ न्योछावर करने की तमन्ना रखते थे। सनत आज भी उसी लगन से लगे हुए हैं। अरुणा का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता पर उसमें वही अदम्य आत्मविश्वास और आशा है। बिहार-आंदोलन में उन्होंने जेपी को स्वर्णदान किया। उसके बाद उन्होंने कभी सोने का स्पर्श नहीं किया।

मैं जब लोहिया जी को विदा करने के लिए खड़ा था। उन्होंने मुझसे पूछा : भाषण तुम्हें कैसा लगा? मैंने उनसे कहा : डॉक्टर साहब, क्षमा कीजिए, मैं आपका भाषण नहीं सुन पाया। मैं लोगों की देखरेख में लगा था। उन्होंने मुझसे कहा कि क्या मुझे स्टेशन छोड़ने नहीं चलोगे? मैंने कहा, काशी पंडित (काशीनाथ मिश्र) आपको छोड़ने जाएँगे।

उससे पहले कृषक मजदूर पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी के विलय के सवाल पर डॉ. लोहिया से मेरी बहस हो चुकी थी। मैं विलय के बहुत खिलाफ था, डॉ. लोहिया उसके पक्ष में थे। आचार्य नरेंद्रदेव भी विलय के खिलाफ थे। कम्युनिस्ट नेता पीसी जोशी ने इस विषय पर एक लेख भी लिखा था। मैंने इसके जवाब में एक लेख लिखा : 'ए नोट टू पीसी जोशी'। बहस जब खत्म हो गई तो लोहिया जी ने काशी से कहा कि तुम्हारा दोस्त चंद्रशेखर कम्युनिस्टों से प्रभावित लगता है। काशी ने कहा कि नहीं, वह तो कम्युनिस्टों के बहुत खिलाफ है। इस पर डॉ. लोहिया ने प्रश्न किया कि यह कैसे कहा जा सकता है? काशी ने इसपर कहा कि उन्होंने पीसी जोशी के खिलाफ एक लेख लिखा है। काशी ने वह पूरा लेख लोहिया जी को पढ़ कर सुनाया।

इसके बाद लोहिया जी ने करुणेश को मेरे पास भेजा। वे इलाहाबाद कॉफी हाउस में मुझे दो घंटे थीसिस समझाते रहे। मैंने उनसे कहा : डॉक्टर साहब, आप हमारे नेता हैं, यह मैं कैसे कहूँ कि मैं आपसे सहमत नहीं हूँ, लेकिन मैं आपसे यह जरूर कहूँगा कि मुझे आपकी बात समझ में नहीं आई। एक घटना और हुई। प्रतापगढ में पीएसपी का कैम्प लगा हुआ था। उसमें डॉ. लोहिया भाषण कर रहे थे। उन्होंने तर्क दिया कि लड़के को अगर तैराकी सिखानी है तो उसे पानी में छोड़ो। अगर हरदम हाथ पकड़े रहोगे तो वह कभी तैरना नहीं सीखेगा। जब वह तैरने में दो घूंट पानी पिएगा तो सीख जाएगा। इसलिए आपको खतरा मोल लेना पड़ेगा। इसके बाद उन्होंने कहा कि सवाल पूछिए। मैंने कहा लोहिया जी एक संदेह है मेरे मन में। आपने तैराकी के सिलसिले में तीन बिन्दु बताए, एक चौथा बिन्दु भी है जिसकी चर्चा आपने नहीं की कि वह क्या है? मैंने बताया कि एक तैराकी सीखने वाला, दूसरा सिखाने वाला, तीसरा है पानी और चौथा बिन्दु है नेचर ऑफ वाटर, जिसकी आपने चर्चा नहीं की। अगर पानी की धारा तेज हो और उसमें लड़के को छोड़ दीजिए तो वह बह जाएगा। मान लीजिए, ठहरा हुआ पानी हो और उसमें मगरमच्छ हों तो लड़के को निगल जाएँगे। आज हिन्दुस्तान की राजनीति में बड़े-बड़े मगरमच्छ प्रयोग कर रहे हैं, इस पर लोहिया जी निरुत्तर हो गए। मुझे उन्हीं दिनों लग गया था कि डॉ. लोहिया एक दिन पार्टी तोड़ेंगे।

(लेखक की आत्मकथा 'जीवन जैसा जिया' से साभार) ■

मौत की जाति

प्रमोद रंजन

यह कहना अजीब लग सकता है कि भारत में पैदा हुआ आदमी कितना लंबा जीवन जिएगा, यह इससे तय हो जाता है कि उसने किस जाति में जन्म लिया है। लेकिन यही सच है। चर्चित अर्थशास्त्री वाणीकांत बोरा इससे संबंधित एक विस्तृत शोध "Caste, Religion, and Health Outcomes in India, 2004-14" शीर्षक से किया था, जो वर्ष 2018 में इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में प्रकाशित हुआ था।

नेशनल सेंपल सर्वे (2004-2014) पर आधारित अपने इस शोध में उन्होंने वर्ष 2004 से 2014 के बीच भारतीयों की मृत्यु के समय औसत आयु का अध्ययन किया। यह अध्ययन बताता है कि भारत में ऊंची कही जाने वाले जातियों और अन्य पिछड़ी, दलित, आदिवासी जातियों की औसत उम्र में बहुत अंतर है।

सामान्यतः आदिवासी समुदाय से आने वाले लोग सबसे कम उम्र में मरते हैं, उसके बाद दलितों का नंबर आता है, फिर अन्य पिछड़ा वर्गों का। एक औसत सवर्ण हिंदू इन बहुजन समुदायों से बहुत अधिक वर्षों तक जीता है।

2014 में आदिवासियों की मृत्यु के समय औसत उम्र 43 वर्ष, अनुसूचित जाति की 48 वर्ष, मुसलमान ओबीसी की 50 वर्ष और हिंदू ओबीसी की 52 वर्ष थी, जबकि इसी वर्ष उच्च जाति के लोगों (हिंदू व अन्य गैर-मुसलमान) की औसत उम्र 60 वर्ष थी। आश्चर्यजनक रूप से ऊंची जाति के मुसलमानों की औसत उम्र ओबीसी मुसलमानों से एक वर्ष कम थी (चार्ट देखें)।

भारत में विभिन्न सामाजिक समूहों की औसत आयु

सामाजिक समूह	2004 में औसत आयु	2014 में औसत आयु
उच्च जाति (गैर-मुसलमान)	55	60
ओबीसी (गैर-मुसलमान)	49	52
ओबीसी मुसलमान	43	50
उच्च जाति मुसलमान	44	49
अनुसूचित जाति	42	48
अनुसूचित जनजाति	45	43

2004 से 2014 के बीच के 10 सालों में सवर्ण हिंदू की औसत उम्र 5 साल, हिंदू ओबीसी की 5 साल, मुसलमान ओबीसी की 7 साल, ऊँची जाति के मुसलमान की 5 साल और अनुसूचित जाति की 6 साल बढ़ी। लेकिन, इस अवधि में अनुसूचित जनजाति की औसत उम्र 2 वर्ष कम हो गई। बताने

की आवश्यकता नहीं कि आदिवासियों की औसत उम्र का कम होना देश के विकास की किस दिशा की ओर संकेत कर रहा है।

स्त्रियों को केंद्र में रखकर इसी प्रकार का एक और शोध इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्टडीज द्वारा 2013 में भी किया गया था, जिसे बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी अपने स्त्रियों संबंधी एक विशेष अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में उद्धृत किया था। इस शोध में पाया गया था कि पुरुषों और स्त्रियों की औसत उम्र में बहुत फर्क है। स्त्रियों में जाति के स्तर पर जो फर्क है, वह और भी चिंताजनक है। शोध बताता है कि औसतन दलित स्त्री उच्च जाति की महिलाओं से 14.5 साल पहले मर जाती है। 2013 में दलित महिलाओं की औसत आयु में 39.5 वर्ष थी जबकि ऊँची जाति की महिलाओं की 54.1 वर्ष।

इसी तरह, एक 'पिछड़े' या कम विकसित राज्य में रहने वाले और विकसित राज्य में रहने वाले लोगों की औसत उम्र में बड़ा फर्क है। "पिछड़े राज्यों" के लोगों की औसत उम्र सात साल कम है। विकसित राज्य में रहने वाले लोगों की औसत उम्र 51.7 वर्ष है, जबकि पिछड़े राज्यों की 44.4 वर्ष।

हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि उच्च जातियों के सभी लोग 60 वर्ष जीते हैं और बहुजन तबकों के 43 से 50 साल। लेकिन अध्ययन बताता है कि भारत में विभिन्न सामाजिक समुदायों की "औसत उम्र" में बहुत ज्यादा फर्क है।

इस शोध से सामने आये तथ्यों से भारत में मौजूद भयावह सामाजिक असमानता उजागर होती है तथा हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारे विकास की दिशा ठीक है? क्या सामाजिक रूप से कमजोर तबकों के कथित कल्याण के लिए राज्य द्वारा उठाए गए कदम पर्याप्त हैं?

(प्रमोद रंजन पत्रकार और शिक्षाविद् हैं) ■

मधु लिमये : समाजवादी विचार के बेजोड़ प्रशिक्षक

श्याम रजक

मैं जब समाजवादी आंदोलन से जुड़ा तब मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि महाराष्ट्र से आये मधु जी और जॉर्ज फर्नांडिस बिहार से चुनाव लड़ते और जीतते हैं। पहले तो मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन बाद में मेरे लिए यह इसलिए गौरव का विषय बन गया कि मैं जिस बिहार में पैदा हुआ वहाँ के लोग क्षेत्रीयता और जातिवाद से ऊपर उठकर, विचार के आधार पर वोट देते हैं। मुझे यह भी लगा कि मैं उस ताकतवर समाजवादी विचार और संगठन से जुड़ा हूं, जो महाराष्ट्र के नेता को बिहार से चुनाव जिताने की ताकत रखता है। मेरे जैसे हजारों युवा जो समाजवादी आंदोलन से जुड़े, उनके लिए मधु जी आजीवन प्रशिक्षक के तौर पर ही रहे। हमारी पीढ़ी उनसे सीखती रही। हर समय यह इच्छा रहती थी कि उन्हें सुनने का मौका मिले तथा जहां कहीं भी उनका लेख छपता था उसको पढ़ने की लालसा बनी रहती थी। आचार्य नरेंद्र देव, जेपी और लोहिया के बाद मैं उन्हें समाजवादी आंदोलन के ऐसे चिंतक के तौर पर देखता हूं जिनका विचार राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों से ओतप्रोत था। बिहार से उनका गहरा जुड़ाव रहा। यहां से 4 बार मुंगेर और बांका लोकसभा से निर्वाचित हुए। उन्होंने संगठनात्मक और संसदीय जनप्रतिनिधि दोनों ही रूपों में एक समर्पित आदर्शवाद का उदाहरण पेश किया। जिस दौर में भीमराव आंबेकडर को हिन्दी समाज खलनायक के रूप में चित्रित कर रहा था उस समय भी उन्होंने उनके महत्व को पुस्तक लिखकर स्थापित किया। कन्टेम्परी इंडियन पॉलिटिक्स, पॉलिटिक्स आफ्टर फ्रीडम आदि उनकी पुस्तकें भारत की संसदीय राजनीति का आईना हैं।

1 मई, 1922 को पुणे में जन्में मधु लिमये की प्राइमरी स्कूल की शिक्षा अपने अवकाश प्राप्त संस्कृत शिक्षक नाना के घर हुआ। पिता अंग्रेजी और संगीत के शिक्षक थे। लेकिन फिर भी आरंभिक वर्षों में शिक्षा प्राप्ति में इन्हें कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मैट्रिक पास करने के बाद 1937 में उन्होंने फग्ग्युशन कॉलेज में दाखिला लिया। यहीं से उनके अंदर सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों का प्रभाव पड़ा। 1938 में अमलनेर में मजदूर किसान सम्मेलन हुआ जिसमें वे केशव गोरे के साथ वहां गए। फिर 31 दिसम्बर, 1938 को उन्होंने कांग्रेस का पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनने का निर्णय लिया। उसके बाद उन्होंने लगातार अपनी सक्रियता बनाये रखी। 1940 में युद्ध विरोधी भाषण के कारण उन्हें एक साल केलिए सश्रम कारावास की सजा हुई। 1942 के कांग्रेस अधिवेशन में जब सारे बड़े नेता जेल डाले जाने लगे तो मधु लिमये ने भूमिगत होकर अच्युत पटवर्धन के मार्गदर्शन में काम किया। सितंबर 1943 में उनकी गिरफ्तारी हुई जहां से मई 1945 में वे जेल से छूटे। उसके बाद

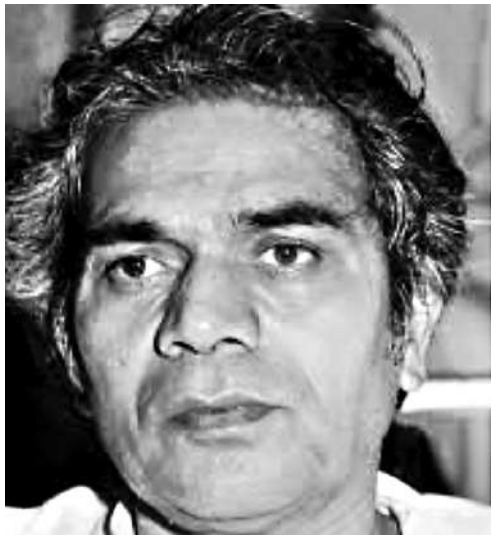

मधु लिमये (1 मई 1922-8 जनवरी, 1995)

उन्होंने जेपी, अशोक मेहता और जोशी जी के साथ सोशलिस्ट इंटरनेशनल सम्मेलन में भारत से दर्शक प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया। मार्च, 1948 में समाजवादी पार्टी के छठे सम्मेलन में वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य चुने गए। 1949 में सोशलिस्ट पार्टी को खुली पार्टी बनाने के लिए पटना में जो नया संविधान पारित किया गया उसे मधु लिमये जी ने ही पारित किया। सन 1951 और 1953 में वे क्रमशः में मद्रास सम्मेलन और प्रजा सोशलिटस्ट पार्टी के संयुक्त मंत्री निर्वाचित किये गए। 15 अगस्त, 1955 को वे गोवा मुक्ति आंदोलन में शामिल हुए और 12 वर्ष कारावास की सजा पाई। 1958 में सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष बने। 1964 में जब संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का गठन हुआ तो मुंगेर ससंदीय क्षेत्र से उप चुनाव में निर्वाचित हुए।1967 में संसद के लिए पुनः निर्वाचित हुए। इस वर्ष लोकसभा में संसोपा के नेता बने। फिर संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष बने। 1971 में बांका क्षेत्र के उप चुनाव में निर्वाचित हुए। 1975 में आपातकाल में जेल गए। संसद की सदस्यता से आपातकाल लगाए जाने और संसद का कार्यकाल बनाये जाने के विरोध में इस्तीफा किया। फिर 1977 में बांका संसदीय क्षेत्र से जीते। 8 जनवरी 1995 को राममनोहर लोहिया अस्पताल में उनका निधन हो गया।

आज जब सांप्रदायिक ताकतें समाज और देश पर हावी हैं, ऐसे समय में मधु जी ने दोहरी सदस्यता का सवाल उठाते हुए देश को चेतावनी दी थी उस पर गौर करना आवश्यक हो गया है। संघ के बारे में उन्होंने जो कुछ कहा था वह सब कुछ आज सच

हो रहा है। सर्वोच्च न्यायालय को लिखित आश्वासन देने के बाद जिस तरह से लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी और अन्य भाजपा के नेताओं ने मौजूद होकर बाबरी मस्जिद को तोड़वाया, उससे यह साफ हो गया कि यह संगठन भारत के कानून और संविधान में विश्वास नहीं रखता। आज भी उसकी निष्ठा भारत के संविधान में न होकर मानसिक तौर पर मनुस्मृति और मनुवाद में बनी हुई है। मुझे इस बात का दुख है कि वंचित तबकों की धार्मिक भावनाओं का दुरुपयोग कर मनुवादी अपनी ताकत लगातार बढ़ाते जा रहे हैं। ऐसे संकट में मधु जी के विचारों की प्रासंगिकता आज पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। उन्होंने संघ परिवार के बारे में जो बातें कही हैं उसको हमें पत्थर पर लकीर के तौर पर स्वीकार करना चाहिए।

मुझे इस बात का गर्व है कि मैं लालू यादव एवं तेजस्वी यादव के नेतृत्व में कार्य कर रही पार्टी राष्ट्रीय जनता दल का सदस्य हूं जिसने धर्मनिरपेक्षता को लेकर कोई समझौता नहीं किया तथा सांप्रदायिक ताकतों का पूरी ताकत लगाकर विरोध किया ,तमाम नुकसान सहकर साम्प्रदायिक ताकतों का सामना किया। मुझे इस बात की भी खुशी है कि मेरे बिहार में बहुसंख्यक लोग आज भी धर्मनिरपेक्षता के विचार को मजबूती से थामे हुए हैं भले ही सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग कर तमाम सारे तिकड़म कर सांप्रदायिक ताकतें बिहार में काबिज हो गई हों लेकिन बिहार के आम नागरिक का मानस अभी तक जहरीला नहीं हुआ है, यानी कि मधु जी के विचारों के साथ आज भी बिहार मुझे खड़ा दिखलाई देता है। इस लेख के माध्यम से इस देश के समाजवादियों से मैं अपील करना चाहूंगा कि वे यह संकल्प लें कि किसी भी परिस्थिति में सांप्रदायिक ताकतों से कोई समझौता नहीं करेंगे। यही मधु लिमये जी के लिए समाजवादियों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक पूर्व मंत्री और राजद के राष्ट्रीय महासचिव हैं।) ■

विरासत

आदिवासी इस देश के प्रथम नागरिक हैं

(इस स्तंभ में जोतीराव फुले, डॉ भीमराव आम्बेडकर, भगत सिंह, डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव, सरदार वल्लभ भाई पटेल और मधु लिमये का लेखन हम पहले प्रकाशित कर चुके हैं। इसबार प्रसिद्ध आदिवासी नेता जयपाल सिंह मुंडा का वह ऐतिहासिक भाषण प्रकाशित कर रहे हैं जो उन्होंने संविधान सभा में 19 दिसंबर, 1946 को दिया था।)

जयपाल सिंह मुंडा

मैं उन लाखों अज्ञात लोगों की ओर से बोलने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं, जो सबसे महत्वपूर्ण लोग हैं, जो आजादी के अनजान लड़ाके हैं, जो भारत के मूल निवासी हैं और जिनको बैकवर्ड ट्राइब्स, प्रिमिटिव, ट्राइब्स, क्रिमिनल ट्राइब्स और जाने क्या-क्या कहा जाता है। पर मुझे अपने जंगली होने पर गर्व है क्योंकि यह वही संबोधन है जिसके द्वारा हम लोग इस देश में जाने जाते हैं। हम जंगल के लोग आपके संकल्प को अच्छी तरह से समझते हैं। अपने 30 लाख आदिवासियों की ओर से मैं इस संकल्प का समर्थन करता हूं। इस भय से नहीं कि इसे भारत के राष्ट्रीय कांग्रेस के बड़े नेता ने प्रस्तावित किया है। हम इसका समर्थन इसलिए करते हैं क्योंकि यह देश के हर नागरिक की धड़कन और उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। इस संकल्प के एक भी शब्द के साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है। एक जंगली और एक आदिवासी होने के नाते संकल्प की जटिलताओं में हमारी कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है। लेकिन हमारे समुदाय का कॉमन सेंस कहता है कि हममे से हर एक ने आजादी के लिए संघर्ष की राह पर एक साथ मार्च किया है। मैं सभा से कहना चाहूंगा कि अगर कोई देश में सबसे ज्यादा दुर्व्यवहार का शिकार हुआ है तो वह हमारे लोग हैं। पिछले छह हजार सालों से उनकी उपेक्षा हुई है और उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया है। मैं जिस सिंधुघाटी सभ्यता का वंशज हूं, उसका इतिहास बताता है कि आप में से अधिकांश लोग, जो यहां बैठे हैं, घुसपैठिये हैं। जिनके कारण हमारे लोगों को अपनी धरती छोड़कर जंगल में जाना पड़ा। इसलिए यहाँ जो संकल्प पेश किया गया है वह आदिवासियों को 'लोकतंत्र' नहीं सिखाने जा रहा। आप सब आदिवासियों को लोकतंत्र सिखा नहीं सकते। बल्कि आपको ही उनसे लोकतंत्र सीखना है। आदिवासी पृथ्वी पर सबसे अधिक लोकतांत्रिक लोग हैं। हमारे लोगों की आकांक्षा वे अधिकाधिक सुरक्षाएं नहीं हैं, जिन्हें नेहरू ने संकल्प में रखा है। आज उनकी जरूरत सरकार से सुरक्षा की है। हम कोई अतिरिक्त या विशेष सुरक्षा की मांग नहीं कर रहे हैं। हम बस यही चाहते हैं कि जो नागरिक प्रस्ताव सबके साथ हो, वही हमारे साथ भी हो। आदिवासियों को भी बराबर का नागरिक समझा जाए। 'हिन्दुस्थान' हमारी समस्या है। पाकिस्तान समस्या है। आदिवासी भी समस्या हैं। अब अगर ऐसे में भिन्न-भिन्न दिशाओं में चिल्लाते हुए लोग एक-दूसरे से मिलने लगें, एक-दूसरे से अलग-अलग भावनाएं रखने लगे, तो हम सभी खत्म हो जाएंगे और देश कब्रस्थान बन कर रह जाएगा। पंडित नेहरू के शब्दों पर विश्वास करते हुए भी मैं कहूँगा कि हमारे लोगों का पूरा इतिहास

गैर-आदिवासियों के अंतहीन उत्पीड़न और बेदखली को रोकने के लिए किये गए विद्रोहों का इतिहास है। मैं आप सब के कहे हुए पर विश्वास कर रहा हूं कि हमलोग एक नये अध्याय की शुरुआत करने जा रहे हैं, स्वतंत्र भारत के एक नये अध्याय की। जहां सभी समान होंगे, सबो को बराबर अवसर मिलेगा और एक भी नागरिक उपेक्षित नहीं होगा। मेरे दिल के अंतहीन उत्पीड़न और वेदखली को रोकने के लिए किए गए विटीका इतिहास है। मैं आप सब के कहे हुए पर भी विश्वास कर रहा एक नए अध्याय की शुरुआत करने जा रहे हैं, स्वतंत्र भारत के न्याय की, जहाँ सभी समान होंगे, सबको बराबर का अवसर मिलेगा और एक भी नागरिक उपेक्षित नहीं होगा। हमारे समाज में जाति के लिए कोई जगह नहीं होगी। हम सभी बराबर होंगे। कैबिनेट मिशन की तरह किसी के साथ कोई उपेक्षा व अन्याय नहीं होगा, जैसा कि 30 लाख लोगों के साथ किया गया है। हमें उस राजनीतिक दृष्टिकोण पर विचार करना चाहिए कि क्यों इस संविधान सभा में सिर्फ 6 ही आदिवासी प्रतिनिधि मौजूद हैं। इसका कारण क्या हैं? संविधान सभा में भी आदिवासियों की बराबर की भागीदारी हो, इसके लिए राष्ट्रीय कांग्रेस ने क्या किया? क्या और आदिवासियों, वह भी केवल पुरुष नहीं बल्कि महिलाओं की भी सहभागिता के लिए कोई प्रावधान या नियम के बारे में सोचा जा रहा है? इस सभा में बैठे हुए सभी पुरुष हैं। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की तरह हमें यहां इस सभा में और महिलाएं चाहिए, जिन्होंने अमेरिका में नस्लवाद को पछाड़कर जीत हासिल की है। हमारे लोग आपके नस्लवाद से, हिंदुओं और उनसे बाकी लोगों के नस्लवादी से पिछले छह हजार सालों से उत्पीड़ित हैं। उससे जूझ रहे हैं। हमारे आदिवासी लोग भी भारतीय हैं और उनका भी उतना ही इस देश से सरोकार है जितना कि किसी और का। इसलिए एडवाइजरी कमिटी, जिसके लिए सदस्यों का चयन होना है, हमारे लोगों को भी जगह दी जानी चाहिए। क्योंकि जब मैंने कैबिनेट मिशन को जो पहला मैमोरेडम दिया था, उसके 20वें सेक्शन की भाषा इस प्रकार थी- The Advisory Committee on the rights of citizens minorities and tribal and excluded areas should contain full representation (mark you 'should contain full representation') of the interests affected... लेकिन, जब मुझे कमांड पेपर 6821 मिला जिसमें इसे फिर से छापा गया था, तो इसकी भाषा बदल दी गई है। अब इसे इस प्रकार से लिखा गया है - The Advisory Committee on the rights of citizens, minorities and tribal and excluded areas will contain due representation"

मेरा विचार है कि शब्दों की ऐसी बाजीगरी और कुछ नहीं हमारे साथ धोखा है। मुझे वे सारे भाषण और संकल्प याद आ रहे हैं जिनमें आदिवासियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार की बातें की जाती रही हैं। यदि इतिहास ने हमें कोई सबक दिया है तो वह मुझे संकल्प के प्रति अविश्वासी बना रहा है। पर मैं ऐसा नहीं करने जा रहा हूं। हम सभी एक नये पथ की ओर अग्रसर हैं। यह बहुत ही सामान्य अपेक्षा है कि हम एक-दूसरे पर विश्वास करना सीखें। और मैं उन दोस्तों से, जो आज उपस्थित नहीं हैं, कहना चाहूँगा कि वे आएँ और कहें कि हम सभी को एक-दूसरे पर विश्वास है। निश्चित रूप से यह समय हम सभी से पूर्ण विश्वास की माँग कर रहा है। एक-दूसरे पर विश्वास करने का एक नया माहौल हम सभी को मिल-जुलकर रचना ही होगा। सभा में 'पार्टीज' और 'माइनोरिटीज' को लेकर इतनी अधिक बहस हो गई है कि मेरा मन इससे खिन्न हो गया है। मैं हमारे आदिवासी समुदाय को माइनोरिटी नहीं मानता। सदन में वैसे भी सुबह से सुन चुका हूँ कि से आदिवासियों को वंचित वर्ग मानना चाहिए। अगर आप आदिवासियों को, जो इस देश के मूल निवासी हैं, उनके साथ भूमिहीन और सामाजिक रूप से बाहरी जातियों को जोड़ना चाह रहे हैं, तो हम इसका विरोध करेंगे, क्योंकि आदिवासी माइनोरिटी या वंचित वर्ग कदापि नहीं हैं। किसी भी सूरत में हम आदिवासियों का हक-हकूक इस देश पर पहला है, जिसे खारिज करने का अधिकार किसी को नहीं है। मुझे इससे ज्यादा कुछ और नहीं कहना है। मैं पंडित नेहरू द्वारा पेश किए गए संकल्प से सहमत हूँ और चाहूँगा कि सदन में उपस्थित सभी सदस्य शब्दों की जुगाली किए बिना इस बारे में न्यायपूर्वक विचार करें। क्योंकि सिर्फ शब्दों से उस संविधान की रचना संभव नहीं है जो हमें सच्ची आजादी की तरफ ले जानेवाला है। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने रामगढ़ कांग्रेस में कहा था - 'कांग्रेस अपनी परिभाषाएँ किसी पर भी नहीं थोपना चाहती है। अधिकारों के लिए किसी को भी बहुसंख्यकों पर निर्भर रहने की कोई जरूरत नहीं है।'

जानता हूं कि अल्पसंख्यकों, आदिवासियों की समस्याओं का समाधान आनेवाले दिनों में ही संभव है। यहाँ मैंने सिर्फ इशारा किया है जिसका समाधान राज्यों के साहसी पुनर्गठन से ही हो सकेगा। रामगढ़ कांग्रेस की सदारत करते हुए आपने (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद) कहा था - 'बिहार के इस भू-भाग में जहां हम सब इकट्ठा हुए हैं इसकी अपनी विशेषताएँ हैं। यह वो क्षेत्र है जहाँ भारत के सबसे प्राचीन बाशिंदे रहते हैं। पूरे भारत में फैले हुए आदिवासी लोग आर्यों से नितांत भिन्न प्रजाति के हैं। दूसरे क्षेत्रों की तरह ही इस क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी आदिम संस्कृति को बचाये रखा है। इसलिए मैं फिर से दोहराऊँगा कि आप आदिवासियों को लोकतंत्र नहीं सिखा सकते। आर्यों की फौज लोकतंत्र को खत्म करने पर तुली है। पंडित नेहरू ने अपनी सद्यःप्रकाशित पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में लिखा है- 'आदिवासियों के बहुत सारे गणतांत्रिक समाज-राज्य थे, और उनमें से कई बहुत बड़े क्षेत्र पर स्थापित थे।' आदिवासियों के वे गणतांत्रिक समाज अभी भी हैं, जो भारत की आजादी की लड़ाई में हिरावल दस्ता रहे हैं। मैं दिल से इस संकल्प का समर्थन करते हुए उम्मीद करता हूं कि जो सदन में मौजूद हैं, और जो बाहर हैं, वे सभी देश के आदिवासियों के विश्वास की रक्षा करेंगे। हम साथ लड़े हैं, साथ बैठे हैं और काम भी साथ करेंगे। सभी की सच्ची आजादी के लिए।

स्रोत : मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा लेखक अश्विनी कुमार पंकज पुस्तक से सभार। ■

अरविंद पासवान

(जिन युवा कवियों ने हिन्दी कविता में अपनी पहचान बनाई है उनमें अरविंद कुछ खास हैं। उनकी कविताओं में आक्रोश और हाहाकार की जगह समकालीन जीवन की धड़कनें हैं। अस्मितावादी मुहावरों से सनी उनकी कविताएं दलित साहित्य के नये गवाक्ष उद्घाटित करती हैं। 18 फरवरी 1973 को हाजीपुर, वैशाली में जन्में अरविन्द की रंगकर्म, गीत, गज़ल एवं संगीत में भी गहरी रुचि है। - संपादक)

भारत रत्न भीमराव

(1)

सूरज की रौशनी फैल गई दुनिया में
उसके ताप का असर हुआ
सूरज के उदय के साथ
हमें सूरज के होने का अहसास
तुम्हारे आने के बाद हुआ।

*

(2)

हमारे लिए रोज़ 14 अप्रैल
और 6 दिसम्बर है
दुनिया से
जातियों के उच्छेदन
विषमताओं, असमानाताओं के नष्ट होने
और दुनिया के सुंदर होने तक।

*

(3)

जागने और जगाने के लिए
केवल 14 अप्रैल और 6 दिसम्बर की तिथि ही
हमारे शब्दकोश में नहीं हैं
यह पल-प्रति-पल हमारी साँसों में हवा की तरह
सीने में धड़कन की तरह स्थापित है
संगीत बनकर।

(4)

हमारे वंशधर
जुल्मों-सितम के शिकार होकर
कैद हो चुके थे
नफ़रतों की जंजीरों से
ठेल दिये गए थे गहन गर्त में जबरन
पशुवत जीने
और मौत को गले लगाने के लिए
लेकिन हमारे वंशधर वसंत के पत्ते नहीं
वंशज थे दूब के
वे सच और संघर्ष की मिट्टी में जीना चाहते थे
दूब बनकर
वे अपनी भीतर की हरीतिमा और हरियाली से
धरती को सुंदर बनाना चाहते थे
मनुष्यों के जीवन को सम बनाने के लिए
समता के सपने लेकर
कई रहबर गुजरें हैं इस कठिन राह से
उनके विचार हमारे लिए आज भी लैम्प-पोस्ट है
उन रहबरों में
तुम्हे भूलना कठिन है बाबा।

*

(5)

तुम्हारे आने से पहले
मुरझा चुके थे पहाड़
सो गईं थीं नदियाँ
गहरी नींद में

फूल
उदास, रंगहीन-गंधहीन हो चुके थे
बंद था चिड़ियों का चहकना
आदमी जो हाशिए पर था
आदमी के दर्जे में नहीं था
बस मुर्दा था

तुम आये
खिल उठे पहाड़ सब
हो उठीं नदियां जीवंत
ओ मेरे कलावंत
मुस्कुराए फूल
चिड़ियों ने छेड़ी एक तान
आदमी में भर गया जान
ओ हमारे जीवन की शान
बाबा तू हम सबकी जान

जगदानन्द सिंह, प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-1 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित। संपादन : प्रेमकुमार मणि

पार्टी गतिविधियां

अमर स्वतन्त्रता सेनानी बाबू कुंवर सिंह के विजयोत्सव दिवस पर राजद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उनके चित्र पर माल्यार्पण करते हुए बिहार राजद अध्यक्ष जगदानंद सिंह।

22 अप्रैल 2022 को राष्ट्रीय जनतादल की ओर से आयोजित इफ्तार आयोजन में शिरकत करते हुए नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव।

बोचहा उपचुनाव में भारी मतों से विजयी अमरजीत पासवान द्वारा नेतृत्व के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन।

पार्टी की ओर से बाबासाहब आंबेडकर की जन्म-जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम की एक झलक।

राष्ट्रीय जनता दल कार्यालय, बिहार द्वारा आदेशित तथा हमारा प्रेस, डोरण्डा, रांची द्वारा मुद्रित, मो. 9334424709